महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015
e-paper:www.srushtiagronews.com

Posted atMalad NDPO Dated of Posting
4th to 5th for (1st to15th issue)
18th to 19th for (15th to 30th Issue)

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

वर्ष : 2 अंक - 01 | मुंबई, 1फरवरी से 15 फरवरी 2014 | मुल्य-2/- रुपए पृष्ठ -8

नैशनल एग्रो एक्सपो लाखों किसानों के लिए लाभकारी: पृथ्वीराज चव्हाण

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने कहा कि 9 फरवरी से शुरू होने वाले नैशनल एग्रो एक्सपो में देश के कई भागों से लाखों किसान आएंगे और इसमें कृषि क्षेत्र की बेहतरीन उपलब्धियों को प्रदर्शित किया जाएगा। इस 5 दिवसीय एक्सपो का उद्घाटन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी करेंगे और इस प्रदर्शनी में आगुंतकों के समक्ष देश के कृषि उत्पादों, कृषि उपकरणों, बीजों, उर्वरकों, कृषि प्रौद्योगिकियों, ड्रिप सिंचाई और आधुनिक उपकरणों को प्रदर्शित किया जाएगा।

इस मौके के लिए भारतीय रेलवे देश के कई भागों से किसानों को ले जाने आने के लिए खास ट्रेन चलाएगी। यह जानकारी चव्हाण ने मंत्रियों के समूह के साथ इस प्रदर्शनी की तैयारियों की समीक्षा करने के बाद दी। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी में करीब 1,000 प्रदर्शनकर्ता भाग लेंगे और कुछ इंटरनैशनल कंपनियां भी होंगी। दौरे पर आने वाले किसानों के लाभ के लिए सेमिनार और विशेषज्ञों के साथ बातचीत भी रखी गई है। वहां कई भाषाओं में अनुवादकर्ता भी मौजूद होंगे ताकि बगैर किसी बाधा के संदेश का प्रसार किया जा सके।

किसान आधुनिक कृषि के प्रति और जागरूक हो-डॉ.अनुप कुमार

साँगरिया (राजस्थान).किसान आधुनिक कृषि के प्रति और जागरूक हो.यह कहना है डॉ अनुप कुमार का। डॉ. अनुपम कुमार कृषि विज्ञान केन्द्र साँगरिया में आयोजित किसान गोष्ठी में संबोधित कर रहे थे। सृष्टि एग्रो द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र सांगरिया में आयोजित किसान गोष्ठी में सृष्टि एग्रो के प्रधान संपादक सी.एस. शर्मा,व श्रीमती संतोष कुमारी ने भाग लिया इसी के साथ जागरूक किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें सम्मानित किया गया!

कृषि विकास के लिए प्रौद्योगिकी का विकास कीजिए : राष्ट्रपति

बारामती राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने रविवार को कृषि संस्थानों को कृषि विकास के लिए नई प्रौद्योगिकी का विकास करने की अपील की। यहां कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में एक नए भवन

(शेष पृष्ठ २ पर)

जैन इरीगेशन को मिली विश्व की सबसे बड़ी सूक्ष्म सिंचाई जल परियोजना

मुम्बई, (जयदीप माथुर) (कृषि एवं सिंचाई क्षेत्र की नामी एवं दिग्गज कंपनी जैन इरीगेशन को कर्णाटक में बागलकोट जिले के 35 गाँवों को सिंचाई एवं पेयजल मुहैय्या कराने का कार्य मिला हे , राष्ट्रीय स्तर की कड़ी प्रतिस्पर्धात्मक बोलियो में इस कंपनी ने बाजी मारी हे. कंपनी सूत्रों के अनुसार ये विश्व की अब तक किये सबसे बड़ी परियोजना हे जिसके द्वारा 7000 से अधिक किसानो को 30381 एकड़ क्षेत्रफल जमींन को सिंचित करने के लिए पानी मिल सकेगा साथ ही वर्त्तमान से भी लगभग आधे पानी की बचत भी हो सकेगी.

कर्णाटक जल स्त्रोत विभाग की कृष्णा भाग्य जल निगम द्वारा जैन इरीगेशन का चयन इस सूक्ष्म सिंचाई परियोजना का सञ्चालन करने के लिया किया गया हे.

हाईकोर्ट ने दी गन्ना किसानों को राहत

नई दिल्ली आगामी लोकसभा चुनाव में गन्ना किसानों के आक्रोश से राजनीतिक दलों को दो चार होना पड़ सकता है। किसानों के साथ चीनी उद्योग भी सांसत में हैं। घाटे से जूझ रहा चीनी उद्योग जहां वित्तीय संकट में है वहीं, गन्ने का भुगतान न होने से किसानों में रोष बढ़ता जा रहा है। मिलों को केंद्र से मिलने वाले ब्याज मुक्त कर्ज की मंजूरी में अभी देरी से स्थिति और बिगड़ने की आशंका है। गन्ना उत्पादक राज्यों उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और कर्नाटक में चीनी उद्योग संकट में है। इसी के चलते वहां के किसानों को उनके गन्ने का भुगतान नहीं हो पा रहा है। पिछले साल के बकाया डएरियर. भुगतान के लिए केंद्र सरकार ने 6600 करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त कर्ज देने का फैसला किया है। मगर इसके प्रावधान इतने उलझे हुए हैं कि मिलों को इस कर्ज के मिलने में अभी काफी देर है।

प्रगतिशील किसान मित्र योजना बंद

कुशीनगर। उत्तर प्रदेश सरकार की प्रगतिशील किसान मित्र योजना अपनी शुरुआत के दो वर्ष बाद ही समाप्त कर दिये जाने से इस योजना के पचास हजार से अधिक लाभार्थी किसान बेरोजगार हो गये हैं। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार ने वर्ष 2007-08 में कृषि विभाग द्वारा किसानों को तकनीकी जानकारी व प्रशिक्षण देने के लिये सभी जिलों में प्रगतिशील किसान मित्र योजना लागू की थी जिसमें राज्य के बेरोजगार ग्रामीण युवकों को रोजगार दिया गया था। यह योजना पांच वर्ष के लिए बनायी गयी थी। पांच वर्ष बाद कृषि उत्पादन बढने पर इसे पुन: बढाने का प्रस्ताव था। इस योजना में आरक्षण का भी प्रावधान किया गया था। प्रत्येक ग्राम पंचायत में प्रगतिशील किसान मित्र इस योजना के तहत रखे गये थे। एक साथ पूरे प्रदेश में पचास हजार बावन बेरोजगारों को रोजगार देने की पहली शुरआत हुई थी लेकिन दो वर्ष के बाद अचानक इस योजना को समाप्त कर दिया गया। कृषि उपनिदेशक महादेव प्रसाद ने बताया कि शासन ने इस योजना को समाप्त कर दिया है। पिछले तीन माह से इस योजना से जुडे प्रगतिशील किसान मित्र प्रदेश के विभिन्न जिलो में किसान मित्र संघ बनाकर मानदेय वेतन भुगतान की मांग कर रहे हैं। कृषि विभाग के उच्चाधिकारियों द्वारा प्रगति किसान मित्रों से कार्य भी कराया गया तथा कहा गया कि सरकारी स्तर से पुन: नवीनीकरण का कोई आदेश नहीं आया है आदेश आते ही मानदेयों का भुगतान कर दिया जायेगा।

रबी फसलों की बुवाई में पांच फीसदी की बढ़ोतरी

नई दिल्ली गेहूं का रकबा 296 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 314 लाख हैक्टेयर अनुकूल मौसम से चालू रबी में जिंसों की बुवाई में 5.2 फीसदी की बढ़ोतरी होकर कुल बुवाई 635.13 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है जबकि पिछले साल इस समय तक 603.39 लाख हैक्टेयर में बुवाई हुई थी। रबी की प्रमुख फसल गेहूं के साथ ही चना और सरसों की बुवाई पिछले साल की तुलना में ज्यादा हुई है। रबी की प्रमुख फसल गेहूं की बुवाई बढ़कर 314.78 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है जबकि पिछले साल इस समय तक 296.09 लाख हैक्टेयर में ही हुई थी। चने की बुवाई पिछले साल के 93.29 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 101.23 लाख हैक्टेयर में और सरसों की बुवाई 67.04 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 71.07

लाख हैक्टेयर में हो चुकी है। दलहन की कुल बुवाई चालू रबी में पिछले साल के 149.02 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 156.57 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है। रबी दलहन में चना की बुवाई तो बढ़ी है लेकिन उड़द की बुवाई पिछले साल से घटी है। मोटे अनाजों की कुल बुवाई चालू रबी में पिछले साल के 61.92 लाख हैक्टेयर से घटकर 60.12 लाख हैक्टेयर में ही हो पाई है। ज्वार की बुवाई पिछले साल के 38.79 लाख हैक्टेयर से घटकर 36.24 लाख हैक्टेयर में हुई है। जौ की बुवाई 7.94 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 8.04 लाख हैक्टेयर में और मक्का की बुवाई पिछले साल के 14.27 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 15.09 लाख हैक्टेयर में हुई है। रबी धान की रोपाई चालू रबी में पिछले साल के 10.73 लाख हैक्टेयर से बढ़कर 15.26 लाख हैक्टेयर में हो चुकी है।

आलू की फसल पर शराब का छिड़काव कर रहे हैं

इलाहाबाद/अलीगढ. लगातार पड़ रही भयानक ठंड से जहां इंसान कांप रहा है, वहीं फसलों पर भी उसका बुरा असर पड़ रहा है। इसी वजह से आलू की फसल उगा रहे किसानों परेशान हैं, लेकिन इस समस्या से निपटने के लिए आलू के किसानों ने अनोखा तरीका निकाला है। किसान आलू की फसल पर शराब का छिड़काव कर रहे हैं।

दरअसल, बढ़ती ठंड से आलू पर पाला गिरने से फसल बर्बाद हो रही थी। किसानों को डर है कि इस सर्दी से उनकी सारी मेहनत बर्बाद हो जाएगी, जिसके लिए

(शेष पृष्ठ २ पर)

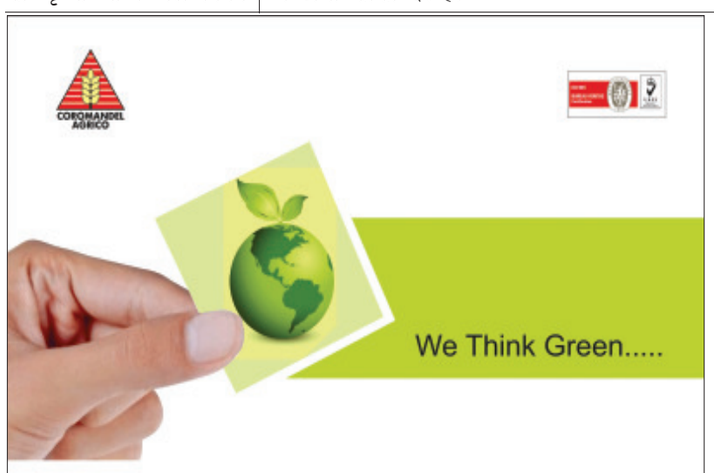

Coromandel Agrico is one of the leading Indian companies in Agrochemicals since last four decades. An ISO 9001:2000 certified company, with an extensive product range comprising Insecticides, Fungicides, Herbicides, Acaricides, Bio-Products and Fertilizers is all set to bring in a revolutionary wave of green prosperity and progress, with a commitment of keeping our environment clean and livable. In the series of fulfilling our commitments, we have stopped producing and marketing all 'red triangle' products which may be harmful for the environment. Thus moved a step ahead to make our up-coming generations smiling.

Coromandel Agrico Pvt. Ltd.
7-Community Centre, (2nd & 3rd Floor), East of Kailash, New Delhi-110065.
Tel. : 011-41620713-17, Fax: 011-2621-5405 • Website : www.coromandelagrico.com

A Pledge to make world Green.

संपादकीय

कृषि बीमा क्यो आवश्यक?

भारत में किसान आत्महत्या 1990 के बाद पैदा हुई स्थिति है जिसमें प्रतिवर्ष दस हजार से अधिक किसानों के आत्महत्या की रपटें दर्ज की गई है। 1997 से 2006 के बीच 1,66,304 किसानों ने आत्महत्या की। ड१भारतीय कृषिबहुत हद तक मानसून पर निर्भर है तथा मानसून की असफलता के कारण नकदी फसलें नष्ट होना किसानों द्वारा की गई आत्महत्या का मुख्य कारण माना जाता रहा है। मानसून की विफलता सूखा, कीमतों में वृद्धि, ऋण का अत्यधिक बोझ आदि समस्याओं के एक चक्र की शुरुआत करती है। बैंकों, महाजनों, बिचौलियों आदि के चक्र में फँसकर भारत के विभिन्न हिस्सों के किसानों ने आत्महत्या की है।

990 ई. में प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार द हिंदू के ग्रामीण मामलों के संवाददाता पी. साईंनाथ ने किसानों के नियमित आत्महत्या की सूचना दी। आरंभ में ये रपटें महाराष्ट्र से आईं। जल्दी ही आंध्रप्रदेश से भी आत्महत्या की खबरें आने लगी। शुरुआत में लगा की अधिकांश आत्महत्याएं महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र के कपास उत्पादक किसानों ने की है। लेकिन महाराष्ट्र के राज्य अपराध लेखा कायर्यालय से प्राप्त आंकड़ों को देखने से स्पष्ट हो गया कि पूरे महाराष्ट्र में कपास सहित अन्य नकदी फसलों के किसानों की आत्महत्या की दर बहुत अधिक रही है।

मौसम की मार झेल रहे किसानों को राहत पहुंचाने के लिए सरकार ने बीमा सुरक्षा देने की कोशिश 1985 से ही शुरू कर दी थी, लेकिन जोखिम ज्यादा होने की वजह से ये योजनाएं लांच होते ही दम तोड़ गईं सरकारी कंपनी भारतीय कृषि बीमा निगम पर फसल बीमा के संचालन की जिम्मेदारी है। 2010 के बाद निजी क्षेत्र की साधारण बीमा कंपनियां भी फसल बीमा के क्षेत्र में उतर आई हैं। लेकिन इनकी योजनाओं को अभी पंख नहीं लग पाए हैं। क्योकि कटाई के दौरान अगर ट्रैक्टर, हारवेस्टर आदि की चिंगारी के कारण आग लगने से फसल को नुकसान होता है तो बीमा कवर नहीं मिलता। अगर आपने खेती के सामान्य नियमों का पालन नही किया और ठीक ढंग से खेती न करने की वजह से नुकसान झेला तो बीमा सुरक्षा भूल ही जाइए। जिन बीमारियों पर आसानी से काबू पाया जा सकता है अगर समय रहते उपाय न किए जाने से फसल को नुकसान होता है तो उसे कवर नहीं मिलता।मोटे तौर पर देखें तो फसल की लागत के बराबर बीमा कवर यानी सम एश्योर्ड होता है। अगर प्रीमियम सम एश्योर्ड का 2 फीसद तक है तो किसान को सब्सिडी नहीं मिलती, लेकिन उसके ऊपर सरकार अपनी ओर से सब्सिडी देती है। बीते साल, केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने कहा था कि सरकार किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि में निवेश बढ़ाने पर जोर दे रही है. इसके लिए फसल का न्यूनतम मूल्य भी बढ़ाया गया. परन्तु

भारत एक बहुत विशाल देश है. साथ ही आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा खेती पर ही निर्भर है. सरकार जो कर रही है वो काफी नहीं है आवश्कता है किसान को सुरक्षा प्रदान करने की ,,बीमा ,ऋण, सरकारी योजनाओ की गति बड़ानी होगी

सुरेश शर्मा (संपादक)

कृषि विकास के...

और प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए मुखर्जी ने कृषि शोध, शिक्षा और संबद्ध संस्थानों के पूरे नेटवर्क से प्रौद्योगिकी के विकास की अपील की।

उन्होंने कहा, ठविज्ञान, प्रौद्योगिकी और इन्नोवेशन नीति 2013 में कृषि क्षेत्र में इन्नोवेशन को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित किया गया है।

उन्होंने कहा, भारत का विश्व में दूध उत्पादन में प्रथम और मछली उत्पादन में दूसरा स्थान है। इन खाद्य सामग्रियों की बढ़ती मांग को देखते हुए उनके अधिकाधिक उत्पादन को ध्यान में रखते हुए रणनीति बनाने की जरूरत है।ठ

उन्होंने कहा, बागवानी, पशुपालन, दुग्ध और मत्स्य क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी जनित विकास से कृषि में क्रांति लाई जा सकती है।ठ

उन्होंने कहा कि कृषि में विकास का लाभ सभी वर्गो को मिलता है। उन्होंने कहा कि अध्ययनों से पता चलता है कि गरीबी हटाने में कृषि में एक फीसदी विकास का प्रभाव अन्य क्षेत्रों में होने वाले विकास की अपेक्षा दूना होता है।

उन्होंने कहा, सितंबर 2013 में 80 करोड़ से अधिक लोगों को सस्ती दर पर अनाज की गारंटी देने के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून लागू किया गया। दुनिया के इस सबसे बड़े सामाजिक क्षेत्र के कार्यक्रम की सफलता हमारे कृषि क्षेत्र की सफलता पर निर्भर करती है।

आलू की फसल पर...

वह अब आलू की फसल पर उर्वरक की जगह देशी शराब करीना का छिड़काव कर रहे हैं। शराब के छिड़काव पर किसान अनोखा तर्क दे रहे हैं। सर्दी में फसल पर पाला गिरने से विलाइट, चुर्री और जड़गलन रोग होता है। फसल को इन बीमारियों से बचाने के लिए किसान आलू की फसल पर शराब का छिड़काव करना सही बताते हैं और उनका कहना है कि शराब में अल्कोहल होता है। अल्कोहल के छिड़काव से फसल में पाला नहीं पड़ता। रोगों से भी बचाव होता है। कीटनाशकों की अपेक्षा शराब सस्ती पड़ती है और इससे पैदावार भी बढ़िया होगी और फसल पर शराब का छिड़काव भी प्रतिबंधित नहीं है।

किसान मित्र — मिर्च की फसल में कीट एवं रोग प्रबन्धन

राम गोपाल सामोता एवं डॉ0 बी.एल.जाट
कीट विज्ञान विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (राज.)

मिर्च एक नकदी मसाला फसल है। भारत मिर्च का प्रमुख उत्पादक, निर्यातक एवं उपभोक्ता है, मिर्च एक ऐसा खाद्य पदार्थ है जो सब्जी, मसाले एवं औषधीय जड़ी—बूटी व सजावटी पौधे के रूप मेंअरबों लोगोंद्वारा प्रयोग की जाती है। इसका एक घटक के रूप मेंऔद्योगिक उत्पादोंमेंभी प्रयोग किया जाता है।

कीट :—

1. थ्रिप्स :— इनके शिशु एवं वयस्क दोनोंही हानि पहुँचाते हैं। यह पत्तियों के हरे भाग को खरोंच कर खाते है, जिससे पत्तियों पर धब्बे पड़ जाते है। यह फूल एवं कोमल तनों का रस भी चूसते हैं फलस्वरूप पत्तियाँ, फल एवं कलियाँ सिकुड़ जाती हैं। इसके अधिक प्रभाव से पौधोंकी बढ़वार रूक जाती है।

इनके प्रभाव से विषाणु बीमारियाँ भी मिर्च में फैलती हैं। थ्रिप्स का प्रभाव ऐसे खेतों मं अधिक होता है जहाँ खेत सूखे होते हैं।

नियंत्रण :—

थ्रिप्स के नियंत्रण के लिए इमीड़क्लोप्रिड़ (2 मि.लि./10ली.) के छिड़काव से अच्छे परिणाम मिले हैं।

इसके नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2ग्रा./10 लि. की दर से करें।

एन.पी. 46 ए नामक किस्म उगानी चाहिए क्योंकि यह थ्रिप्स की प्रतिरोधी किस्म हैं।

आक्रमण होने पर मोनोक्रोटोफास 36 एस.एल. या मिथाइल डिमेटान 25 ई.सी. का 1 मि.लि. प्रति लिटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

2. चेपा :— यह पंखदार तथा पंखविहीन दोनों ही प्रकार के छोटे हरे पीले रंग के कीट होते हैं पंखदार चेंपे में धारियाँ भी पाई जाती है। इसके लार्वा एवं प्रौढ़ पौधों के विभिन्न भागों में से रस चूसकर पौधों के विकास एवं बढ़वार को प्रभावित करते है। प्रभावित पौधों की पत्तियों में पीले और हरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। पौधों पर फूल एवं फल कम लगते हैं। पौधे छोटे एवं झाड़ीनुमा हो जाते है। ये पौधों में विषाणु जनित रोग भी फैलाते हैं।

नियंत्रण :—

चेंपे की रोकथाम थ्रिप्स कीट की तरह करें। इसके अलावा मेटासिस्टाक्स (2 मि. ली./ली.) या रोगर 0.025 प्रतिशत या मेलाथियान (2 मि.ली./ली.) के घोल के छिड़काव से भी अच्छे परिणाम मिले है।

कार्बेरिल (5प्रतिशत) या मैलाथियॉन (5 प्रतिशत) चूर्ण का 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव करें। मोनोक्रोटोफास (40 ई.सी.) 500—600 मिलि या फॉस्फोमिडान (85 एस.एल.) 200—250 मि.लि. के 800—1000 लिटर घोल का छिड़काव करें।

3. फल छेदक :— इस कीट की सूंडियाँ फलियों में छिद्र करके उनके अन्दर प्रवेश कर जाती हैं और फलियों को खाती रहती हैं। कभी—कभी यह कीट पौधों की कोमल शाखाओं को भी काट देता है।

नियंत्रण :—

फल छेदक के नियंत्रण के लिए स्पाइनोसैड़ (2 मि.ली./10 ली) या नोवालूरॉन (1 मि.ली./ली.) का छिड़काव करें।

इसके नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2 ग्रा./10 लि. की दर से करें।

इस कीट के नियंत्रण हेतु सेविन के 0.2प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए। घोल का दूसरा छिड़काव 12—15 दिन बाद करें।

फलियोंको तोड़ने के उपरान्त छिड़काव करना चाहिए और फिर छिड़काव के 5—7 दिन बाद ही फलियाँ तोड़ लेनी चाहिए।

4. माइट :— इस कीट की कई प्रजातियाँ मिर्च की पत्तियों को खाकर फसल को क्षति पहुँचाती है। इसके शिशु एवं वयस्क दोनों ही हानिकारक हैं जो अपने थूक से पत्तियों पर जाला सा बुनकर हरा पदार्थ खाते रहते हैं। इन जालों मं हजारों की संख्या में माइट मिलती है। इसके प्रभाव से पत्तियाँ टेढ़ी भी पड़ जाती है और उन पर धब्बे पड़ जाते है। फलस्वरूप बहुत हानि होती है।

नियंत्रण :—

इस कीट के नियंत्रण हेतु डाइकोफाल 18.5 ई.सी. का 1.0—1.3 लिटर 625 लिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव

करें। यदि आवश्यक हो तो दूसरा छिड़काव 10—15 दिन बाद करें।

माइट को ओमाइट (2 मि. ली./ली.) के छिड़काव से नियंत्रित किया जा सकता है।

माइट के नियंत्रण के लिए इमामेक्टिन बेंजोएट का छिड़काव 2 ग्रा./10 लि. की दर से करें।

रोग :—

1. आर्द्र गलन :—यह एक फफूँदी जनित रोग है, जिनमेंपिथियम, फाइटोफथोरा, यूजेरियम एवं राइजोक्टोनियां की विभिन्न प्रजातियाँ प्रमुख हैं। सर्वप्रथम इनका आक्रमण बीजों के अंकुरण के समय होता है। जैसे ही बीजांकुर बीज से बाहर आता है। इनके प्रकोप के कारण सड़ जाता है। यदि इनसे बचकर भूमि के ऊपर आ जाता है तो तने की भूमि के समीप वाले भाग पर जलसिक्त दिखाई पड़ता है, जिसमें सड़न होने लगती है, जिससे बीजांकुर गिर जाते हैं।

नियंत्रण

बीज को बोआई से पूर्व 2—3 ग्राम कैप्टान या थाइरम प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करके बोएं।

पौधशाला की भूमि को 15 सेमी. रखें ताकि फालतू पानी का निकास हो जाए।

पौधशाला में बीज बोने से पूर्व 4—5 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से कैप्टान या थाइरम मिलायें।

बीज घने न बोएं।

सिंचाई हल्की एवं बार—बार करें।

ब्लाइटौक्स — 50 एक किलोग्राम प्रति 300 लिटर पानी में मिलाकर या डाईफोलेटान 0.2प्रतिशत का छिड़काव करें एवं मिट्टी को दवा से भिगोएँ।

2. श्यामव्रण (एन्थ्रक्नोज) :— यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सीसी नामक फफूँदी के कारण होता है। मिर्च का अतिव्यापक रोग है। विकसित पौधों पर रोग के कारण शाखाओं का कोमल शीर्षाग्र ऊतकक्षयी होकर सूख जाता है। बाद में सूखने की क्रिया नीचे की ओर बढ़ती है। इस अवस्था को शीर्षारम्भिक्षय की संज्ञा दी जाती है। फलों पर यह रोग पकने के समय लगता है। जब फल लाल होने लगते है उन पर छोटे—छोटे काले और धब्बे दिखाई देते है। ये धब्बे फल की लम्बाई में बढ़ते है। बाद में इनका रंग धूसर हो जाता है। अन्तिम अवस्था में फल काले होकर गिर जाते हैं।

नियंत्रण :—

स्वस्थ एवं प्रमाणित बीज बोना चाहिए।

बीज बोने से पूर्व कैप्टन या सेरेसान से उपचारित कर लेना चाहिए।

फसल से समय—समय पर रोगी पौधे उखाड़ते रहें और फसल अवशेषों को जला दें।

ब्लॉइटाक्स—50 के 0.2—0.3 प्रतिशत घोल का फसल पर प्रति सप्ताह छिड़काव करें।

फसल—चक्र अपनाने चाहिए।

3. चूर्णी फफूँदी :— यह एक फफूँदी जनित रोग है। रोग के लक्षण सर्वप्रथम सामान्यतः पत्तियोंकी ऊपरी सतह एवं नये तनों पर सफेद चूर्ण धब्बों के रूप में दिखाई पड़ते है। धब्बों पर उपस्थित चूर्ण टैल्कम पाउडर से मिलता—जुलता होता है।

नियंत्रण :— कैराथेन (0.05 प्रतिशत) या कैलिक्सिन (0.2 प्रतिशत) का प्रत्येक सप्ताह छिड़काव करें।

4. फल विगलन :— यह रोग फाइटोफ्थोरा नामक फफूँदी के कारण होता है। फलों पर प्रारम्भ में पीले भूरे रंग के संकेन्द्र वलभयुक्त धब्बों के रूप में होता है। फल मृदु विगलन से नष्ट हो जाते है।

नियंत्रण :—

उपयुक्त फसल चक्र खरपतवार नियंत्रण और पानी का उचित जल निकास इस रोग के नियंत्रण हेतु नितान्त आवश्यक है।

प्रति सप्ताह डाइथेन एम—45 (0.2 प्रतिशत) घोल का छिड़काव करना चाहिए।

5. जीवाणु धब्बा :— यह रोग "जैन्थोमोनास बेसिक्टोरिया" नामक जीवाणु के कारण होता है। पत्तियों पर धब्बे छोटे, उठे हुए, भूरे, पहले चिकने व बाद में खुरदरे हो जाते हैं। रोगग्रसित पत्तियाँ पीली पड़कर गिर जाती है। संक्रमण बचे फलों पर भी होता है।

नियंत्रण :—

बोने के लिए बीज स्वस्थ फसल से लेना चाहिए।

बीज को बौने से पूर्व 2.5 ग्राम एग्रोसान/किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।

खेत में खरपतवारों का नियंत्रण करें।

रोग के लक्षण दिखाई देते ही स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 200 मि.लि. प्रति लिटर पानी में घोलकर 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

6.पर्ण संकुचन :— मिर्च की फसल को सब से अधिक क्षति पहुँचाने वाला रोग है। रोग के प्रकोप के कारण पत्तियाँ सिकुड़कर मुड़ जाती है वे छोटी रह जाती है। और इनमें झुर्रियाँ पड़ जाती हैं, पूरा पौधा बौना रह जाता है, यह रोग सफेद मक्खी द्वारा होता है।

नियंत्रण :—

रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर जला दें।

रोग वाहक कीटों को नष्ट करने हेतु 0.1 प्रतिशत मैलाथियान, डाईजिनॉन, मेटासिस्टाक्स आदि का 7 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

दानेदार कीटनाशक कार्बोयूरान 1.5—3.0 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर पौध रोपण से पूर्व मिट्टी में मिलाएँ।

7. मौजेक विषाणु :— इस रोग के कारण पत्तियों पर गहरे व हल्के हरे पीलापन लिए धब्बे बन जाते हैं। इस रोग को फैलाने में रस चूसने वाले कीट सहायक होते है।

नियंत्रण :—

बोने के लिए स्वस्थ बीज का प्रयोग करें।

खेत और पौधशाला की भूमि से रोगी फसल के अवशेषों को एकत्र करके जला देना चाहिए।

रोग—रोधी किस्में ही उगाएँ।

रोगवाहकों के नियंत्रण हेतु पर्णकुंचन रोग की तरह ही कीटनाशक दवाइयों का उपयोग करें।

तुलसी की वैज्ञानिक तकनीक द्वारा उन्नत खेती

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
सी. सी. एस. हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

तुलसी की लगभग 60 प्रजातियाँ एशिया, अफ्रीका, अमेरिका तथा अन्य देशों में पाई जाती है। इनमें ओसीमम सेन्कटम (घरेलू तुलसी) ओ. बेसीलिकम, ओ. केनम या अमेरिकेनम (काली तुलसी) ओ. ग्रेटीसीमम (वन या राम तुलसी) ओ. क्लीमेन्डसचेरिकम (कपूर तुलसी) एवं ओ. विरिडी (जंगली तुलसी) प्रमुख है। तुलसी का पौधा औषधीय गुणों से परिपूर्ण एवं सगंध तेल का उत्तम स्त्रोत हैं।

उपयोग : विभिन्न प्रजातियों की तुलसी के तेल में रासायनिक तत्व अलग—2 होने के कारण विभिन्न उत्पादों में प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग सुगंध बनाने, सर्दियों की औषधियों निर्माण, खाँसी एवं कफ की दवा बनाने, कन्फेक्शनरी उद्योग एवं टुथ पेस्ट, माऊथवास, डेन्टल क्रीम आदि के निर्माण में किया जाता है। इसका तेल खाद्य पदार्थों को सुवासित करने में भी किया जाता है।

प. मीठी तुलसी (ओसीमम बेसीलिकम)

ओसिमम बेसिलिकम को स्वीट बेसिल या फ्रेंच बेसिल या इंडियन बेसिल आदि नामों से भी जानते हैं। यह प्रजाति बहुत ही उपयोगी है, क्योंकि इसमें मीठा तुलसी का तेल (स्वीट बेसिल आयल) मिलता है। लगभग 3000 साल से इसकी खेती यूरोप और एशिया में की जा रही है। ओसिमम बेसिलिकम लेमिएसी कुल का पौधा है। पौधे की लंबाई 30—90 सैं.मी. होती है। पत्तियों की लंबाई 3—5 सैं.मी. होती है। पौधे में बहुत सी तेल कोशिकाएं होती हैं जो सगंध तेल देती है।

जलवायुः तुलसी को सभी प्रकार की जलवायु वाले स्थानों पर उगाया जा सकता है। उत्तर भारत के मैदानी भागों में तुलसी को ग्रीष्म ऋतु की फसल के रूप में उगाया जा सकता है। तुलसी की संतोषजनक वृद्धि के लिए मध्यम तापक्रम अधिक उपयुक्त रहता है। अधिक वर्षा तथा पाला तुलसी की उपज पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

भूमिः तुलसी को विभिन्न प्रकार की मृदाओं एवं जलवायु में आसानी से उगाया जा सकता है। तुलसी की खेती करने के लिए दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी जिनका पी.एच. 5—8 हो एवं जलधारण क्षमता अच्छी हो, उपयुक्त समझी जाती है। अधिक रेतीली व भारी दोमट मिट्टी उपयुक्त नहीं है।

खेत की तैयारीः खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो बार देशी हल या कल्टीवेटर से जोत कर पाटा लगाएं। गोबर की गली सड़ी खाद उपलब्ध हो तो अंतिम जुताई के समय मिट्टी में मिला दें। खेत की तैयारी इस प्रकार करें कि मई—जून में पौध लग जाए।

किस्मः कुसुमोहक एवं विकार सुधा ब्ड ।च लखनऊ द्वारा विकसित किस्में हैं।

नर्सरीः मैदानी भागों में बीज की नर्सरी अप्रैल—मई में एक मीटर चौड़ी व चार मीटर लंबी उठी हुई बनाएं तथा घास—फूस रहित हो। प्रत्येक क्यारी में 4 किलो गोबर की गली सड़ी खाद मिलाएं तथा प्रति क्यारी 20—30 ग्राम बीज बोएं। तुलसी का बीज बहुत ही हल्का होता है इसलिए उसमें रेत मिला लें। बुवाई करते समय लाईन से लाईन की दूरी 6 सैं.मी. रखें। एक एकड़ की रोपाई के लिए 8 क्यारियां तथा 200—250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। बीज का भाव लगभग 500 रु. प्रति किलो है। नर्सरी को पुआल से ढक दें व सिंचाई करें। तुलसी का बीज 3—10 दिन में जम जाता है। जैसे ही बीज उग आए पुआल को हटा दें। ज्यादा गर्मी के दिनों में हल्का पानी सुबह और शाम लगाएं। 20—25 दिन के बाद पौधा 10—15 सैं.मी. का हो जाए तो उसे उखाड़ कर खेत में रोप दें।

रोपाईः नर्सरी से पौध उखाड़ने के तुरंत बाद पौध को गीले कपड़े या टाट की बोरी से ढक दें जिससे अधिक गर्मी के कारण पौध न मुरझाए। पौधों की रोपाई सायंकाल में करें। लाईन से लाईन की दूरी 45 सैं.मी. तथा पौधों की दूरी 30 सैं.मी. रखें। प्रत्येक क्यारी की रोपाई करने के बाद सिंचाई करते जाएं।

खादः तुलसी की खेती में अधिक पैदावार के लिए 15—16 टन गोबर की खाद प्रति एकड़ खेत तैयार करते समय डालें।

सिंचाई तथा जल प्रबंधः वर्षा शुरू होने से पहले 10—12 दिन के अंतर पर सिंचाईयां करें। सितंबर में भी सिंचाई की आवश्यकता पड़ सकती है। अधिक वर्षा होने पर ज्यादा देर तक खेत में पानी न रुकने दें।

निराई—गुड़ाई तथा खरपतवार नियंत्रणः पहली निराई गुड़ाई 20—25 दिन बाद तथा दूसरी 40—45 दिन बाद करनी चाहिए।

कटाईः तुलसी की फसल 10—12 सप्ताह में तैयार हो जाती है। पौधों की निचली पत्तियाँ पीली पड़ने पर फसल की कटाई करें। अंतिम कटाई के समय पूरे पौधे को ही काट कर तेल निकलवा सकते हैं। कटाई के बाद 4—5 घंटे फसल को हल्की धूप में सुखा लें। पहली कटाई 75—90 दिन तथा शेष कटाईयां 45—60 दिन के अंतराल पर करें। फसल की कटाई भूमि की सतह से 15—20 सैं.मी. ऊपर से करें जिससे अगली कटाई के लिए फसल जल्दी तैयार हो सके। शाक की पैदावार और तेल की मात्रा भूमि की उर्वरा शक्ति और जलवायु पर निर्भर करती है।

प्रमुख कीटः तुलसी में कई प्रकार के कीट पत्तियों व फूलों को खाकर नष्ट करते हैं जिनमें से प्रमुख कीट इस प्रकार हैं :

प) तुलसी का पर्ण बेलक (बासिल लीफ रोलर) : इस कीट का प्रकोप मैदानी भागों में जुलाई से सितंबर तक देखा गया है। सूंडी पत्तियों को लपेट कर अंदर ही अंदर नष्ट कर देती है। कभी—कभी कीट की सूंडी फूल के पास जाला सा बना कर अंदर फूल को चट कर जाती है। रोकथाम के लिए बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

रोमयुक्त सूंडी (हेयरी कैटरपिलर) : वयस्क मादा समूह में निचली पत्तियों पर अंडे देती है। 4—6 दिन में अंडों से बच्चे निकलने लगते हैं। प्रथम व द्वितीय अवस्था में सूंडियां समूह में रह कर पूरा पौधा चट कर जाती है। तीसरी व चौथी अवस्था में सूंडी एक पौधे से दूसरे पौधे पर, फिर धीरे—धीरे पूरे खेत में पहुंच जाती है। रोकथाम के लिए शुरू की अवस्था में जब कीट समूह में हो तो पौधे को उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

प्रमुख रोगः

झुलसा (सपहीज): यह रोग आल्टरनेरिया नामक फफूंदी द्वारा होता है। रोग से पौधे के ऊपरी भाग में चकते बन जाते हैं जो शुरू में बादामी तथा बाद में काले हो जाते हैं। कभी—कभी रोग तने पर भी चकते बनाता है। रोगग्रस्त पत्तियां गिर जाती हैं। यदि पौधों पर रोग का आक्रमण अधिक हो तो उन्हें उखाड़ कर जला दें तथा बायो इन्सेक्टीसाईड का प्रयोग करें।

पप) पत्तियों का झुलसा (Leaf blight): यह रोग कोलेटोट्राइकम कैप्सकी नामक फफूंदी द्वारा होता है। सबसे पहले छोटे—छोटे धब्बे बनते हैं और बाद में मिल कर बादामी बड़े चिकते हो जाते हैं। रोग का प्रकोप पुरानी पत्तियों पर ही अधिक होता है। रोकथाम झुलसा रोग की तरह करें।

उकठा (Wilt) यह रोग यूजेरियम आक्सीस्पोरम नामक फफूंदी द्वारा होता है। शुरू में रोग का आक्रमण होने पर पत्तियां मुरझाने लगती हैं। फिर शाखा मुरझाती है और धीरे—धीरे पूरा पौधा सूख जाता है। पानी जमा होने वाली भूमि में रोग का प्रकोप अधिक होता है। यदि पौधे को उखाड़ कर बीच में चीर कर देखा जाए तो तने के अंदर बादामी धारी दिखाई देती है। खेत में उचित जल निकास का प्रबंध करें। रोपाई करने से पहले 0.2 प्रतिशत टेफासान या एगलोल कीटनाशक घोल में पौधें की जड़ों को डुबो कर रोपाई करके कुछ रोकथाम की जा सकती है।

तेल की पैदावारः कटाई के बाद 4—5 घंटे तक फसल को छाया में सुखा लें जिससे पौधों की नमी कम हो सके। इस बात का ध्यान रखें कि पौधों को धूप न लगे, वरना तेल की मात्रा कम हो जाएगी। कटाई खुले मौसम में करने से उपज अच्छी मिलती है तथा भाप द्वारा आसवन विधि से तेल निकालें। ताजा वजन के अनुसार पौधों में 0.2—0.3 प्रतिशत तेल होता है। एक एकड़ से 40—60 किलो तेल प्रति वर्ष 2—3 कटाई में प्राप्त होता है। तेल की गुणवता लिनालूल, मिथाईल चेविकोल एवं मिथाईल सिनामेट पर निर्भर करती है।

आय—व्ययः तेल का औसत षव 200—250 रुपए प्रति किलोग्राम है और खेती पर लगभग 3000 रु. प्रति एकड़ खर्च आता है। इस प्रकार लगभग 6000 रु. प्रति एकड़ की आय अप्रैल से नवम्बर तक होती है।

पप. लौंग तुलसी (ओसीमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसीमम)

तुलसी की विभिन्न प्रजातियों में से ओसिमम ग्रेटीसीमम किस्म क्लोसिमम एक सुगन्धित तेल वाली बहुवर्षीय फसल है जिसके तेल में लौंग के तेल के सभी गुण होते हैं। इसके तेल में यूजीनोल नामक सुगंधित तत्व होता है।

उपयोगः इसका तेल खाद्य पदार्थों में खुशबू के अलावा दंत चिकित्सा और दंत मंजन में भी प्रयोग किया जाता है।

जलवायुः यह विभिन्न प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है, जैसे उष्ण, उपउष्ण तथा गर्म आर्द्रता वाले क्षेत्र जहाँ 85—130 सैंटीमीटर वर्षा हो। इसके अलावा इसे शीत एवं उपशीत क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।

भूमिः यद्यपि इसको विभिन्न प्रकार की भूमि पर लगाया जा सकता है परंतु रेतीली दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. मान 6.5 से 8.0 हो, अति अनुकूल है।

किस्मः आर. आर. एल. ओ जी.—14

नर्सरी की तैयारीः नर्सरी की जगह को 3—4 बार अच्छी तरह तैयार करें तथा बाद में एक भाग मिट्टी व एक भाग गोबर की खाद को मिलाकर उठी हुई क्यारियां बनायें ताकि पानी क्यारियों में इकट्ठा न हो। 200 ग्राम बीज एक एकड़ के लिए काफी रहता है। बीज को क्यारियों में छिड़क कर उस पर रेत तथा गोबर की खाद की बारीक तह लगा दें तथा फव्वारे से सिंचाई दें। बीज 10—15 दिन में अंकुरित हो जाते हैं तथा पौधे 4—5 सप्ताह में रोपाई के लिए तैयार हो जाते हैं। नर्सरी बिजाई का उपयुक्त समय मार्च का महीना है।

खेत की तैयारीः खेत को 2—3 बार जोतकर अच्छी तरह बारीक तैयार तथा समतल करें ताकि ज्यादा पानी खड़ा न हो सकें।

खादः खेत तैयार करते समय लगभग 10—12 टन गोबर की अच्छी गली सड़ी खाद प्रति एकड़ डालें।

पौध रोपाईः जब पौधों की लंबाई 10—15 सैं.मी. हो तथा 5—6 पत्तियां आ जाएं तो खेत में 60□60 सैं.मी. रोपाई कर दें। रोपाई के तुरंत बाद पानी अवश्य लगायें।

सिंचाईः आरम्भ में 2—3 हल्की सिंचाई करें ताकि पौधा जड़ पकड़ सकें। बाद में आवश्यकतानुसार पानी लगायें। प्रत्येक कटाई बाद पानी अवश्य लगाएं तथा बाद में गुड़ाई करें।

कटाईः साल में तीन कटाई ली जा सकती है। फूल आने पर फसल को 15—20 सैंटीमीटर जमीन से ऊंचा काटें। कटाई क्रमशः जून, सितंबर और नवंबर मास में लें।

तेल की मात्राः हरे चारे में तेल की मात्रा लगभग 0.4 से 0.5 प्रतिशत होती है। प्रथम वर्ष में लगभग 50—60 लीटर तेल प्रति एकड़ प्राप्त किया जा सकता है जबकि बाद में यह मात्रा बढ़कर 80—100 लीटर प्रति एकड़ हो जाती है।

आय—व्ययः तेल का औसतन भाव 250 रु प्रति लीटर है। इस प्रकार प्रथम वर्ष में लगभग 8,000—9,000 रु तथा बाद में 15,000—20,000 रु प्रति एकड़ तक लाभ मिल जाता है।

धानुका का जापान की निसान केमिकल्स के साथ गठजोड़

नई दिल्ली घरेलू पेस्टीसाइड कंपनियों में अहम मानी जाने वाली धानुका एग्रीटेक लिमिटेड को अपने कारोबार मे चालू साल में 25 फीसदी बढ़ोतरी की उम्मीद है। इस साल अक्तूबर तक कंपनी का कारोबार 31 फीसदी की दर से बढ़ा है। इसके साथ ही कंपनी साणंद स्थित अपने संयंत्र का विस्तार भी कर रही है। देश में आनुवांशिकीय रूप से परिवर्तित (जीएम) फसलों के बढ़ावे के बावजूद कंपनी अपने कारोबार में लगातार बढ़ोतरी देख रही है। पेस्टीसाइड की जगह आने वाले दिनों में हर्बीसाइड का कारोबार बढने की कंपनी को अधिक उम्मीद है। धानुका एग्रीटेक लिमिटेड के ग्रुप चेयरमैन आर. अग्रवाल ने बताया जीएम फसलों के बढने से पेस्टीसाइड के कारोबार पर क्या कोई प्रतिकूल असर पड़ा है? मुझे ऐसा नहीं लगता है क्योंकि जीएम फसलों में किसी एक बीमारी की रोकथाम के लिए ही जीन डाला जाता है। ऐसे में दूसरी बिमारियों के लिए पेस्टीसाइड की जरूरत पड़ती है। साथ ही अभी तक केवल कपास में ही जीएम प्रजातियां आई हैं। उसमें भी बालवार्म बीमारी के लिए जीएम तकनीक का उपयोग किया गया है। यह बात सही है कि इसमें पेस्टीसाइड का उपयोग घटा है लेकिन दूसरी फसलों में बढ़ा है। चालू साल में बेहतर बिक्री इसे साबित करती है। चालू साल में धानुका एग्रीटेक का कारोबार कितना बढ़ा है? चालू साल में अक्तूबर तक हमारा कारोबार ३१ फीसदी की दर से बढ़ा है। चालू साल में हम 25 फीसदी की बढ़ोतरी का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं। किस उत्पाद की बिक्री अधिक तेजी से बढ़ रही है? आने वाले दिनों में विडीसाइज का जमाना है क्योंकि खेती के लिए लगातार मजदूरों की किल्लत बढ़ती जा रही है। ऐसे में किसानों को विडीसाइड का उपयोग ही बेहतर दिख रहा है। कम खर्चे में फसलों से खरतपतार को नष्ट करने का यह आसान तरीका है। इसके लिए हमारा जापान की निसान केमिकल्स के साथ गठजोड़ है।

एमेज एक्स भारतीय बाज़ार में अवतरित ... जुझेर खोराकीवाला

जानी मानी कृषि रसायन निर्माता कंपनी बायोस्टेड इंडिया लि . ने हाल ही अपना नया उत्पादद एमेज एक्स भारतीय बाज़ार में अवतरित किया , जिसके बारे में कंपनी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक जुझेर खोराकीवाला ने सृष्टि एग्रो के वरिष्ठ संवादाता जयदीप माथुर के साथ हुई बातचीत में बताया.

एमेज एक्स क्या हे ?

ये एक ऐसी अविष्कारक तकनीक द्वारा बनाया गया फार्मूला हे जो दूसरे अन्य उत्पादों से भिन्न एवं अनूठा हे जिसमे पौष्टिक तत्तवों से भरपूर समुद्री पौधों का अंश , अन्य पौष्टिक तत्तवों के साथ एमिनो एसिड व ह्यूमिड एसिड का समावेश हे जो कि पौधो को हर तरह से विकसित करता हे.तथा इसमे समावेशित अत्यंत शक्तिशालीजैविक तत्त्व, तीव्र एवं तुरंत असरकारी व एक समान गोलाकार दाने , तीन प्रकार से पौधों एवं फसलों को भरपूर भरण पोषण प्रदान करते है!

ये दूसरे अन्य उत्पादों से किस प्रकार भिन्न है ?

जैसा कि मैंने बताया एमेज एक्स में समुद्री पौधों एवं जड़ी बूटियों से निकाले गए पौष्टिक तत्वों का अंश हे जो अन्य कृषि रसायनो के साथ मिलकर फसलो एवं पौधों को भरपूर पोषण प्रदान करता है , इसके धूलरहित, एकाकार गोल दाने व समान रूप से विभक्त सिलिका कण इसको पानी में अत्यंत घुलनशील बनाते हे जिसके द्वारा ये कम नमी वाले तापमान में भी बहुत असरकारी रहता है!

एमेज एक्स का फल कि फसलो पर कैसे उपयोग किया जाता है ?

ये एक ऐसा कम खुराक वाला सम्मिश्रण है जो कि अन्य खाद एवं रसायनों के साथ चार किलो प्रति एकड़ कि दर से उपयोग में लिया जा सकता हे. फलों की फसल के लिए इसकी अनुमानित मात्रा 100 ग्राम से लेकर 250 ग्राम प्रति पौधों के हिसाब से वर्ष में दो बार इनकी उम्र के अनुसार उपयोग में लिया जा सकता है!

बाज़ार में ये किस प्रकार की पैकिंग में उपलब्ध है ?

एमेज एक्स बहुत ही आकर्षक दुग्ध केन पेकिंग में आ रहा हे ये दूध के केन खाद्य पदार्थों एवं दूध जैसी सामग्री को रखने के लिए अत्यंत उपयोगी रहेंगे ये आकर्षक पेकिंग के साथ साथ हमारे प्रिय ग्राहकों के लिए बहु उपयोगी उपहार भी है, .

■ जयदीप माथुर

'जल घुलनशील उर्वरक उपयोग '

जी.एस.कांगवा,वरिष्ठ प्रबंधक(कृषि सेवाएं) -इफको,राजस्थान

जल घुलनशील या शत प्रतिशत घुलनशील उर्वरक क्या है ?

उतर- यह वह उर्वरक है जिनको पानी में घोलने पर कोई अवशेष नही बचता है यानि की यह उर्वरक पूर्ण रुप से जलमें घुल जाते है। इसी लिए इन्हे जल घुलनशील उर्वरक कहते है।

यह उर्वरक प्रचलित रसायनिक उर्वरको से कैसे भिन्न है ?

जैसा कि नाम से ही विदित है कि इनमें उपलब्ध पौध पोषक तत्व शत प्रतिशत घुलनशील अवस्था में उपलब्धहै,इसलिए पौधे पूर्णरूप से इनका उपयोग कर लेते है।

२-प्रचलित उर्वरको की उपयोग दक्षता 25 से 60 प्रतिशत है जबकि इनकी उपयोग दक्षता 80 से 90 प्रतिशत है।

इन उर्वरको का प्रयोग क्यो करे ?

मृदा में सामान्य उर्वरको का उपयोग सही समय व सही विधि से करने पर भी फसलो को पोषक तत्वो कीउपलब्धता काफी कम होती है। जैसे नत्रजन की उपयोग क्षमता(दक्षता)25से 55%,फास्फोरस की 20से 25%,पोटाशकी 50से 60% एंव सल्फर की १०से 15 % ही हो पाती है। मृदा में सामान्य उर्वरको का प्रभाव फसलो को देरी सेमिलता है तथा फसलो की अग्रिम अवस्था में कम गतिशील पोषक तत्व फास्फोरस व पोटाश की कमी हो जानेपर,सामान्य उर्वरको के माध्यम से इस कमी को दूर करना कठिन हो जाता है,जिससे उपज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

यह जल घुलनशील उर्वरक कौन-कौन से होते है ?

जल घुलनशील उर्वरक कई प्रकार के होते है लेकिन अपने यहां प्रचलित उर्वरक यूरिया फास्फेट (17:44), एन.पी.के.(18:18:18),सल्फेट आफ पोटाश या पोटेशियम सल्फेट(0:0:50) तथा बोरान (14.6%) आदि राज्य कीसहकारी समितियो पर उपलब्ध है।

इनको किस तरह उपयोग मे लिया जाता है ?

इनको दो प्रकार से उपयोग में लिया जाता है।

1- टपक(ड्रिप)/बून्द -बून्द सिंचाई प्रणाली के उर्वरक टैंक या क्यूरी मे डालकर घोल को सिचांई के पानी के साथउपयोग किया जाता है। जिससे उर्वरक सीधे जड़ के पास पहुंच जाते है,यह उतम तरीका है जिससे उर्वरक का पूर्ण रूपसे उपयोग होता है।

2-खडी फसलो में बुवाई के 30 दिन बाद से कटाई से 30 दिन पहले तक पानी मे 1 से 1.5% (एक लीटर पानी में10से 15ग्राम उर्वरक) का घोल बनाकर स्प्रेयर से खड़ी फसलो पर छिड़क कर किया जाता है।

प्रश्न-६, इनका किन-किन फसलो मे उपयोग कर सकते ?

उतर-इनका सभी फसलो में उपयोग किया जा सकता है। जैसे अनाज वाली फसले ,सब्जियां,उद्यानिकी (फलो,फूल?वाली) फसले तथा गन्ना व कपास आदि सभी फसलो मे इनका उपयोग किया जा सकता है।

इनके कितने छिड़काव करने चाहिए ?

उतर-फसलो की आयु के अनुसार 2 से 3 छिड़काव किये जाने चाहिए तथा फलों वाली फसलो में प्रत्येक बार फलोंकी तुड़ाई के बाद इनका छिड़काव किया जा सकता है।

इनके छिड़काव में क्या- २ सावधानियां बरतनी जानी चाहिए ?

उतर-इनके छिड़काव में निम्न सावधानियां बरतनी जानी चाहिये।

किसी भी हालत में 1.0से 1.5%से अधिक सांद्रता के घोल का छिड़काव नही करना चाहिए।

2-पौधों पर फूल आने की अवस्था में छिड़काव न करे,अन्यथा फूल झड़ सकते है। फूल झड़ने के बाद फल/बीज बनतेसमय छिडकाव कर सकते है,जिससे उपज मे वृद्धि होती है।

3-एक बार में केवल एक ही उर्वरक का छिड़काव करे। दो या दो से अधिक उर्वरक को साथ मिलाकर छिड़काव नहीकरे।

4-उर्वरक को पानी में घोलने के बाद ही स्प्रेयर टैंक में ड़ाले।

5-खड़ी फसल में खरपतवारनाशी रसायन का अगर छिड़काव करना हो तो खरपतवारनाशी छिड़काव के 8-10 दिनबाद ही इन उर्वरको का छिड़काव करे।

पानी में घुलनशील उर्वरको को उपयोग करने के क्या फायदे है ?

उतर-पानी में घुलनशील उर्वरको को उपयोग करने के कई फायदे है।

पौधें अपनी खुराक (पोषक तत्वो) की आवश्यक मात्रा का अधिकांश भाग जड़ो द्वारा लेते है परन्तु थोड़ी मात्रापतियों से सोखकर भी लेते है। पतियो पर छिड़का गया उर्वरक सीधा पौधो की रसोई में पहुंच जाता है(क्योकि पौधे कीपतिया ही भोजन बनाने का कार्य करती है)

जिससे पौधों को अपनी आवश्यकता की खुराक तुरंत मिल जाती है।

२-यदि बुवाई के समय या बाद में फसल की आवश्यकता अनुसार पोषक तत्व नही दिये गये है तो उनकी कमी कीआपूर्ति पतियो पर उर्वरक के छिड़काव से की जा सकती है जिससे उपज मे बढोतरी होती है।

3- पानी में घुलनशील उर्वरको के छिड़काव से उपज में 5से 25% तक बढोतरी के साथ-2 उपज की गुणवता अच्छीहोती है।

4-क्षारीय/लवणीय भूमि में उगाये पौधे, भूमि में आवश्यक पोषक तत्वो की उपलब्धता होते हुए भी उन्हे ग्रहण नही करपाते है। इन भूमियो में बोयी गयी फसलो में जल घुलनशील उर्वरक का पतियो पर किया गया छिड़काव बहुतलाभदायक होता है।

5-खडी फसल मे पतियों से दिये गये उर्वरको की पूरी मात्रा का पौधो द्वारा तुरंत उपयोग कर लिया जाता है।

6-खड़ी फसलो में मांग के अनुरूप पोषक तत्वो की पूर्ति इन उर्वरक के उपयोग से की जा सकती है।

7-इनके प्रयोग से मृदा व वायुमण्डल का प्रदूषण कम होता है

क्या जिन फसलो में बुवाई के समय डीएपी या एनपीके खाद दिया गया है उन फसलो में भी इन खादो काप्रयोग किया जाना चाहिये ?

इन उर्वरको का प्रयोग उन सभी फसलो मे किया जाना चाहिये जिनमे बुवाई के समय डीएपी या एनपीके खाददिया गया है,इन उर्वरको की मात्रा बुवाई के समय दिये उर्वरको की मात्रा के अतिरिक्त है।

चाय उत्पादन का नया रिकॉर्ड

नई दिल्ली, भारतीय चाय उद्योग ने इस साल नवंबर तक चाय का उत्पादन 100 करोड़ किलोग्राम से ज्यादा दर्ज किया है, जो पिछले साल के पूरे वर्ष के उत्पादन से थोड़ा ही कम है। इंडियन टी एसोसिएशन (आईटीए) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी से नवंबर तक देशभर में चाय का उत्पादन 106.60 करोड़ किलोग्राम रहा है, जबकि पिछले वर्ष जनवरी से दिसंबर तक उत्पादन 112.60 करोड़ किलोग्राम रहा था। नवंबर तक का उत्पादन पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 7.5 करोड़ किलोग्राम ज्यादा है। टी बोर्ड ऑफ इंडिया ने पत्तियां खरीदने वाली फैक्टरियों को शामिल करने के लिए अपने 2011 के आंकड़ों में संशोधन किया है। पत्तियां खरीदने वाली फैक्टरियां वे छोटी उत्पादक हैं, जो अपनी फैक्टरियों में प्रसंस्करण होने वाली करीब दो-तिहाई पत्तियां अन्य उत्पादकों से खरीदती है। उद्योग के एक प्रतिनिधि ने कहा, 'अगर यह रुझान जारी रहा तो हम उत्पादन का नया रिकॉर्ड बना सकते है। हालांकि दिसंबर के दौरान आईटीए के उत्तरी भारत के कुछ सदस्यों की फसल को नुकसान पहुंचा है।' नवंबर तक उत्तरी भारत का उत्पादन 7.05 करोड़ किलोग्राम ज्यादा था। हालांकि नवंबर में उत्पादन 58.8 लाख किलोग्राम कम रहा। दक्षिण भारत में उत्पादन नवंबर तक 45.5 लाख किलोग्राम ज्यादा उत्पादन दर्ज किया है।

क्लास का पेडीपेन्थर 26 बाज़ार में

(जयदीप माथुर) पिछले 20 वषी से भारतीय कृषि बाज़ार में अपनी ख़ास पहचान रखने वाली कृषि उपकरण निर्माता कंपनी क़्लास इंडिया ने कंबाइन हार्वेस्टिंग श्रेणी में पेडीपेंथर 26 के नाम से मजबूत, कारगर एवं आरामदायक पेडी प्रत्यारोपण उपकरण भारतीय बाज़ार में उतारा है !सी . वी. टी. ट्रांसपूंट एवं अगले पहियो के अत्यंत आधुनिक तकनीक वाला ये उपकरण 22 एच पी क्षमता वाला पेडीपेंथर 26 पेट्रोल इंजन द्वारा संचालित हे और इसकी इंधन खपत भी मात्र 4 .5 से 5 लीटर प्रति घंटा है ! उच्च विकसित तकनीक द्वारा निर्मित ये यन्त्र किसानो के लिए काफी मददगार साबित होगा क्यूंकि ये किसी भी तरह की कृषि सतह पर आसानी से काम में लिया जा सकता है जो बेहतर उत्पादन के साथ ही किसान भाइयो के लिए काफी लाभदायक सिद्ध होगा गत दिसंबर की 5 से 7 तारीख को नयी दिल्ली में संपन्न कृषि प्रदर्शनी एग्रोमेक में क्लास इंडिया की स्टाल पर आगंतुकों ने इसके उत्पादों को बहुत पसंद किया एवं सराहा.

गेहूं की फसल में पीला रतुआ रोग

हनुमानगढ़ जिले के नोहर क्षेत्र में गेहूं की फसल में पीला रतुआ नामक बीमारी का प्रकोप पाया गया है। कृषि अधिकारियों के मुताबिक जसाना, फेफाना, पदमपुरा, परलीका, राजपुरिया, रामगढ़ व गोगामेड़ी आदि गांवों में इस बीमारी के लक्षण देखे गए हैं। पीला रतुआ रोग आर्द्र वातावरण में अधिक पनपता है। अभी यह बीमारी नोहर व भादरा इलाके में है, मगर पीलीबंगा, संगरिया व हनुमानगढ़ जैसे क्षेत्रों में भी फैलने की आशंका है। 2011-12 में भी जिले में इस बीमारी का प्रकोप पाया गया था। उस समय फरवरी माह में इस रोग के लक्षण देखने को मिले थे, लेकिन अब शुरुआती स्टेज में ही यह रोग पाया गया है। अधिकारियों के मुताबिक इस बीमारी के फैलने से उत्पादन काफी प्रभावित हो सकता है हालांकि अभी दवा का छिड़काव कर इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है। यह है पीला रतुआ रोग पीला रतुआ रोग फंफूदजनित बीमारी है। कम तापमान और अधिक आर्द्रता होने से यह बीमारी फैलती है। हालांकि गेहूं की कुछ किस्मों में यह बीमारी नहीं होती लेकिन कई किस्में इस बीमारी के प्रति रजिस्टेंट नहीं है। इस रोग में पौधे की पत्तियों पर पीली धारियां बन जाती है और इसके

चलते प्रकाश संशलेषण की प्रक्रिया प्रभावित होती है और उत्पादन कम हो जाता है। यह है रोकथाम का उपाय : विभागीय अधिकारियों के मुताबिक रोग का लक्षण मिलने पर प्रोपिकॉनाजोल 25 प्रतिशत ईसी 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए। इसे जरूरत के अनुसार 10-15 दिन में दोहराया जाए। ऐसा करने पर रोग को नियंत्रित किया जा सकता है। अभी किया जा सकता है नियंत्रण?नोहर-भादरा क्षेत्र के कई गांवों में गेहूं की फसल पीला रतुआ से प्रभावित है। जिले के अन्य क्षेत्रों में भी यह रोग हो सकता है।

इफको- उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ते कदम

महाराष्ट्र में इफको ने तकरीबन 600 हेक्टर पर 1100 किसानो के खेत में सिंचाई लगाने में वित्तीय सहायता कि है। तकरीबन 30400 से अधिक किसानों को बायोगैस लगवाने हेतु वित्तीय सहायक की है। 10 से अधिक सोलर स्ट्रीट लाईट एव 200 सोलर लैम्प कि वितरण किया है । तकरीबन 500 हेक्टर से अधिक क्षेत्र पर खाद एव फसल अवंशेष प्रबंधन के प्रदर्शन लगाये है। इफको सक्षक्त सहकारी संस्था के रूप में अपनी पहचान को बनाये रखते हुए सहकारी आंदोलन एवं भारतीय कृषि तथा ग्रामीण विकास को गति प्रदान करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को और उत्साह के साथ बढ रहा है।

केस्टर सीड में तेजी की संभावना

नई दिल्ली केस्टर तेल में निर्यातकों की मांग बढे से सीड की कीमतों में तेजी की संभावना है। चालू वर्ष में केस्टर तेल का कुल निर्यात लगभग 10 से 12% बढे का अनुमान है जबकि मार्च महीने में आने वाली केस्टर सीड की नई फसल की पैदावार में 20 से 25% की कमी आने की आशंका है। केस्टर तेल में निर्यात मांग पहले की तुलना में बढ़ी है। हालांकि स्टॉकिस्टों की सक्रियता के कारण चालू महीने में केस्टर सीड की कीमतों में गिरावट आई है लेकिन आगामी महीनों में केस्टर तेल के निर्यात सौदों में तेजी आने की उम्मीद है।ऐसे में केस्टर सीड की मौजूदा कीमतों में 10 से 15 फीसदी की तेजी आने की संभावना है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में दाम बढे से निर्यातकों को अच्छा मार्जिन मिल रहा है, केस्टर तेल के निर्यात सौदे 1,400-1,450 डॉलर प्रति टन की दर से हो रहे है।

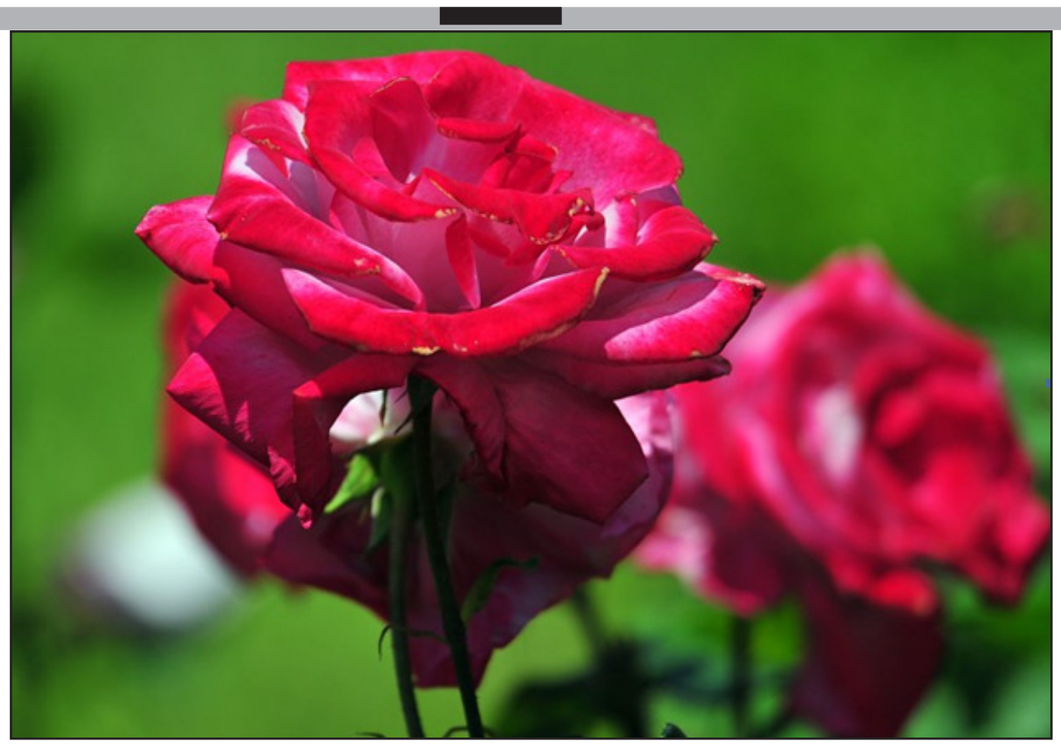

गुलाब की उन्नत खेती

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निल दुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

गुलाब का पुष्प जगत में एक विषिष्ट स्थान है, इसलिये इसे फूलों का राजा कहा जाता है। इसे सौन्दर्य का प्रतीक समझाा जाता है और आदिकाल से ही विश्वभर के उद्यानों में उगाया जाता रहा है। सौन्दर्य के अलावा गुलाब का औद्योगिक महत्व भी है। इससे प्राप्त इत्र, गुलकन्द, गुलाब जल व शरबत का उपयोग व्यापक रूप से किया जाता है। इसके अलावा गलाब की कलमों, पौधों और कटे फूलों का उद्योग भी देश-विदेश में अच्छी तरह से स्थापित है।

गुलाब की खेती को दो भागों में विभक्त किया गया है। पहले भाग में वे गुलाब लिये गये हैं, जिन्हें गृह उद्यानों, बाग-बगीचों की शोभा बढ़ाने व कटे फूल प्राप्त करने के लिये उगाये जाते हैं। दूसरे भाग में वे जातियां ली गई है, जिनकी खेती व्यवसायिक स्तर पर खुले फूल, गुलाब, इत्र, गुलकन्द व शरबत आदि बनाने के लिये की जाती है।

जलवायू- गुलाब के पौधे अधिक ताप व लू को बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। अधिक तापक्रम से फूलों का रंग फीका पड़ जाता है तथा पंखुड़ियां शीघ्र ही बिखर जाती है। अच्छे पुष्प उत्पादन के लिये 15 डिग्री से 27 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है।

भूमि-गुलाब की खेती किसी भी प्रकार की भूमि में की जा सकती है लेकिन उत्तम किस्म के फूल प्राप्त करने के लिये जीवांषयुक्त व अच्छे जल निकास वाली दोमट भूमि, जिसके नीचे २ फुट गहराई तक किसी तरह की कड़ी सतह न हो, सबसे उत्तम रहती है। भूमि का पी.एच. मान ६ से ७ के बीच होना अच्छा रहता है। भारी तथा क्षारीय भूमि गुलाब के लिये ठीक नहीं है।

मुख्य किस्में

लाल : एवन, भीम, हैपीनेस, मिराण्डी, रेडपिचर, रक्त गन्धा, ग्लैडियर आदि।

गुलाबी :फर्स्ट प्राइज, पिक परफेक्ट, क्वीन एलिजाबेथ, सदाबहार, सुचित्रा, पीटर आदि।

पीला : ऑलगोल्ड, बुकानेर, गोल्डन् जॉइन्ट, गोल्ड डोट आदि।

गहरा लाल:क्रिमसन ग्लोरी, कालिया, लाल बहादुर, ओक्लोहोमा आदि।

नारंगी : मान्टेजुमा, औरन्ज सेन्सेषन, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, सुपर स्टार, सन फायर, शोला, जेरिना आदि। रंगीन धारियों वाला अभिसारिका, ऐनविल स्पार्क्स, केयर लेस लव, मदहोष, औरन्ज स्पार्क, वैषाली।

अन्य नवीनतम किस्में

पूसा अजय, पूसा अरुण, पूसा शताब्दी, पूसा मुस्कान

प्रसारण

गुलाब की प्रसारण कलमें लगाकर एवं चष्मा चढ़ाकर किया जाता है। मूल स्कन्द ;रूट स्टॉकद्ध के लिये पौधे कलमों द्वारा तैयार किये जाते हैं तथा तैयार पौधों पर मनचाही किस्मों का कलिकायन किया जा सकता है। मूल स्कन्द के लिये बारामासी ;एडवर्डद्ध, रोजाइण्डीका व तीतरी किस्में सवोत्तम हैं। दिसम्बर-जनवरी महिने में इन किस्मों की कलमों को २५ से ३० सेन्टीमीटर की दूरी पर क्यारियों में लगा दिया जाता है। तीन-चार महिनों में इनमें जड़ें एवं शाखाएं निकल आती हैं और उन पर अगली जनवरी के माह में चश्मा चढ़ाया जाता है। चश्मा चढ़ाने के एक-डेढ़ माह बाद जब कलिका फूट जाये तो कलम वाले पौधे के कली के उपरी भाग को काट कर हटा देते हैं। इस प्रकार देशी गुलाब का जड़ वाला भाग और इच्छित गुलाब की कली मिलाकर एक कलमी पौधा तेयार हो जाता है। इसके लिये टी बडिंग सबसे अच्छी पायी गयी है।

सस्य क्रियाएं

गुलाब की खेती हेतु निष्चित आकार की क्यारियों की 50 से 60 सेन्टीमीटर की गहराई तक खुदाई करें। 10 से 15 दिन जमीन खुली छोड़कर इसकी तीन-चार बार और गुड़ाई करें। पौधे लगाने का सबसे उत्तम समय अक्टूबर-नवम्बर माह है। गुलाब के पौधे औसतन 60 सेन्टीमीटर से एक मीटर की दूरी पर लगाये जाते है। प्रत्येक किस्म को अलग-अलग क्यारियों में लगाना चाहिये। पौधे लगाने से पूर्व 30ग30ग30 सेन्टीमीटर का गड्ढ़ा खोदकर पौधा लगाकर हल्की सिंचाई कर देनी चाहिये। पौधा लगाते समय ध्यान रखें कि निरोग व स्वस्थ पौधे ही लगायें तथा कलिकायन किया हुआ भाग भूमि से ५ सेन्टीमीटर उॅचा रखें, जिससे कलिकायन को हानि न पहुंचे।

खाद एवं उर्वरक

गुलाब की अच्छी बढ़वार व फूलों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिये खाद व उर्वरक अत्यन्त आवश्यक है। खाद व उर्वरक देने के पूर्व सितम्बर के तीसरे सप्ताह से पानी देना बन्द कर देना चाहिये, जिससे कि भूमि सूख जाये। अक्टूबर से पहले या दूसरे सप्ताह में कटाई-छंटाई के तुरन्त बाद गुलाब के तने के चारों तरफ की मिट्टी को 10 से 15 सेन्टीमीटर गहराई तक तथा 45 सेन्टीमीटर की गोलाई में खुदाई कर निकाल लेते हैं। पौधों को 4 से 5 दिन के लिये ऐसे ही खुला छोड़ देते हैं, जिससे कि जड़ों की तपाई हो जाये। अब प्रत्येक पूर्ण विकसित पौधे के चारों ओर की खुदी हुई जगह में 10 किलो सड़ी गोबर की खाद व 25 ग्राम एण्डोसल्फॉन 4 प्रतिशत या क्यूनॉलफास 1.5 प्रतिशत चूर्ण मिलाकर भर देवें व गहरी सिंचाई करें। एक-दो सप्ताह बाद 75 ग्राम यूरिया, 125 ग्राम सुपर फॉस्फेट व 35 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधे के हिसाब से पौधे के मुख्य तने से 15 से 20 सेन्टीमीटर की दूरी पर चारों तरफ भूमि में अच्छी तरह मिलाकर पानी लगा देते हैं। जब कलियां बनना आरम्भ हो जाये तो 75 ग्राम यूरिया और देवें। उर्वरकों का मिश्रण घोल के रूप में भी पौधों पर छिड़क कर दिया जा सकता है, इससे पौधों का विकास अच्छा तथा फूल बड़े तथा अधिक संख्या में खिलते हैं।

यूरिया 30 ग्राम, अमोनियम फॉस्फेट 30 ग्राम, पोटेषियम सल्फेट 30 ग्राम के मिश्रण की 30 ग्राम मात्रा को 10 लीटर पानी में घोलकर 10 से 15 दिन के अन्तर से छिड़काव के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

उपरोक्त खाद व उर्वरक देने के बाद भी कई बार गौण पोषक तत्वों की कमी के लक्षण पाये जाते हैं। इनमें मैंगनीज, मैगनीषियम, लोहा व बोरोन आदि मुख्य है। इसकी कमी की पूर्ति के लिये 10 ग्राम मैगनीज सल्फेट, 20 ग्राम मैगनीषियम सल्फेट, 10 ग्राम चिलेटेड आइरन व 5 ग्राम बोरेक्स के मिश्रण की 2 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़कने से फूल व पत्तियों के रंगों में निखार आता है। यदि उपरोक्त मिश्रण न बना सकें तो बाजार में बनाये मिश्रण भी उपलब्ध है।

कटाई-छंटाई

गुलाब की खेती में सबसे महत्वपूर्ण कृषि कार्य पौधों की कटाई-छंटाई है। साल में एक बार अक्टूबर के माह में कटाई-छंटाई करना आवश्यक है। कटाई-छंटाई के समय पतली, सूखी रोगग्रस्त और एक दूसरे में उलझी हुई शाखाओं को सबसे पहले काटा जाता है। फिर जाति के अनुसार कटाई-छंटाई की जाती है।

हाईब्रिड टी किस्मों में 3 से 5 मोटी शाखाओं को छोड़कर अन्य सभी को मुख्यत तने के पास से काट देते हैं। चुनी हुई शाखाओं को भी 5-6 आंख तक छोड़कर काट देते हैं। ध्यान रखें कि काटते समय शाखा की अन्तिम आंख बाहर की तरफ पड़े।

पोलिएन्था एवं फलोरीबन्डा किस्मों मे सबसे कम कटाई-छंटाई की आवष्यकता होती है। कटाई-छंटाई के तुरन्त बाद कटे भाग पर ब्लाईटोक्स अथवा बोडी पेस्ट का लेप करें। पौधों में निराई करते समय कलिकायन के नीचे से फूटी शाखाओं को शीघ्र हटा देना चाहिये।

सिंचाई

गुलाब की खेती मे गर्मियों में 7-10 दिन और सदिर्यों में 15-20 दिन के अन्तर में सिंचाई करते रहना चाहिये।

प्रमुख कीट

शल्क कीट ;स्केलद्ध

ये कीट टहनियों एवं तने पर भारी मात्रा में चिपके हुए रहते हैं। कीट ग्रसित पौधों पर अवयस्क शल्क पाये जाते हैं। इस कीट के प्रकोप से पौधा कमजोर पड़ जाता है और अधिक प्रकोप की अवस्था में सूख जाता है।

नियंत्रण हेतु पौधों का कृन्तन कर रोगग्रस्त भाग को इकट्ठा करके नष्ट कर देवें।

डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.लि./लिटर या मिथाईल डिमेटॉन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

मोयला चेपा (एफिड)

यह कीट पत्तियों, कली एवं कोमल टहनियों का रस चूसते हैं, फलस्वरूप्प पौधों की बढ़वार रूक जाती है और फूलों की गुणवत्ता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इस कीट का प्रकोप नवम्बर से अप्रैल तक अधिक रहता है।

नियंत्रण हेतु डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.लि./लिटर या क्विनलफॉस 25 ई.सी 2 मि.लि./लिटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 1 मि.लि./4 लिटर का प्रयोग करें। नीम या पैनगेमिया तेल का 2 प्रतिषत का छिड़काव करें।

तना छेदक मक्खी

ये गहरे नीले रंग की छोटी मक्खी कटे हुए सिरों में छेद करके अन्दर घुस जाती है तथा पूरी टहनी सूख जाती है।

नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. अथवा डाईमिथोएट 30 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर की दर से छिड़काव करें।

थ्रिप्स

ये कीट पत्तियों तथा पंखुड़ियों से रस चूस लेता है तथा इसके कारण पत्तियां मुड़ जाती हैं तथा इनमें धारियां पड़ जाती हैं।

नियंत्रण हेतु मिथाईल आक्सीडेमेटान या डाइमेथोएट या ऐसिफेट या इमिडाक्लोरोपिड 5 मि.ली. प्रति दस लीटर पानी की दर से 2 या 3 बार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

स्पाइडर माईट

ये कीट पूर्ण विकसित पत्तियों के नीचे की ओर रेषमी सफेद जाले में रहता है। गर्म तथा सूखा वातावरण इसके लिये सबसे उपयुक्त है।

नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त हिस्सों को काटकर जला दें तथा पौधे पर माईटेक या इथीयान 5 मि.लीटर प्रति दस लीटर पानी के घोल का 2 से 3 बार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

प्रमुख व्याधियाँ

छाछ्या ;पाउडरी मिल्ड्यद्ध

इस रोग के आक्रमण से पत्तियों एवं कलियों पर सफेद चूर्ण के धब्बे दिखाई देते हैं या अधिक रोगग्रसित पत्तियां पीली पड़कर झड़ जाती है। नियंत्रण हेतु कैराथेन एल.सी. 1 मिलीलीटर या कैलेक्सिन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

एन्थ्रेक्नोज इस रोग के प्रकोप से पत्तियों पर गहरे भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं और रोगग्रसित भाग मुरझाकर सूखने लगते हैं।

नियंत्रण हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें।

डाई बैक कांट-छांट के पष्चात प्रायः ये रोग टहनियों में लग जाता है। टहनियां उपर से नीचे की ओर सूखने लग जाती है तथा पूरा पौधा सूख कर मर सकता है।

नियंत्रण हेतु सूखे भाग को काट-छांट करके हटा दें ताकि इसमें बोडीक्स मिक्सचर या गुलाब पेन्ट (कॉपर काबीनेट रेड लेड अलसी का तेल 4Š4Š5 के अनुपात में) कटी टहनियों के सिरे पर लगा दें।

उपज प्रति हैक्टेयर औसतन २५०० से 3000 किलोग्राम फूल प्राप्त होते हैं, किन्तु अच्छी फसल होने पर 3000 से 4000 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर तक फूल प्राप्त हो सकते हैं।

प्याज एवं लहसुन में कीट व रोग नियंत्रण

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
विषय वस्तुविशेषज्ञ (उद्यानिकी)
डॉ. स्वप्निलदुबे
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

प्याज व लहसुन प्रमुख नकदी फसलें हैं । बाजार मांग बढ़ने के फलस्वरुप इन फसलों का क्षेत्रफल निरंतर बढ रहा हैं । ये फसल ेनिर्यात के लिए उपयोगी है । तथा इनका प्रसंस्करण ेभी प्रयोग होता है।प्याज व लहसुन की फसल पर विभिन्न प्रकार के कीट एवं रोंगा ेका प्रकोप होता है । जो फसल की उपज गुणवत्ता एवं संग्रहण अवधि को प्रभावित करते है।इन फसलों में लगने वाले कीट एवं बीमारियों तथा उनकी रोकथाम के उपाय नीच ेसुझाये जा रहे है ।

प्रमुख कीट एवंनियंत्रण

1.थ्रिप्स–थ्रिप्स प्याज व लहसुन का प्रमुख कीट है।शिशु व वयस्क दोनो ही पत्ती को खुरच कर रस पीते है।इस कीट का प्रकोप तापमान वृद्धि के साथ ज्यादा होता है ।

नियंत्रण–थ्रिप्स के नियंत्रण हेतु डाएमिथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली.प्रति लीटर या कार्बेरिल 50 डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव करें।

2.मैगट–इस कीट के प्रकोप से पौध ेऊपर से नीचे की और भूरे पडकर सूख जाते है । तथा मेगट जमीन के नीचे तने व कन्द में प्रवेश कर क्षति पहुँचाते है ।

नियंत्रण–मेगट के नियंत्रण हेतु फिप्रोनिल 0.3 जी 18 किग्रा प्रति हेक्टेयर या कार्बोफ्यूरॉन 3 जी 25 किग्रा प्रतिहेक्टेयर का उपयोग करें ।

प्रमुख रोग एवंनियंत्रण

1.बैंगनी धब्बारोग–रोग से प्रभावित भाग पर छोटे सफेद रंग के धंसे हुए ध ब्बे बनते है।उग्र अवस्था में ये धब्बे बैंगनी रंग में बदल कर तथा बडे होकर पत्तियों व तने को झुलसे हुए लक्षण के साथ नष्ट कर देते है।

नियंत्रण–

बैजों को बुवाई से पहले कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोबीज की दर से उपचारित करें।

डाइथेन एम 45 या ब्लाईटाक्स 50 (2 ग्राम प्रतिलीटर पानी)को आवश्यकतानुसार 10 दिन के अन्तराल पर छिडकाव करें ।

2.झुलसारोगपत्ती व बीज वष्न्तोंपररोग के लक्षण कालेभूरे धब्बों के रूप में दिखाई देते हैजिसमें पौधा मुरझा जाता है।

नियंत्रण–मेन्कोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम प्रति लीटर या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. 5 ग्राम प्रति लीटर पानी मेंघोलकर छिडकाव करें ।

3.जड़विगलन–इस रोग का प्रकोप शल्क कन्दों पर धब्बों द्वारा अथवा बाहरी त्वचा व जड़ों के गलने से शुरू होता है ।उग्र अवस्था में पत्तियॉ पीली पड़कर सूख जाती हैं तथा जड़ें गुलाबी होकर सड़ जाती है। यह सड़न खेत और भण्डारण या दोनो जगह मे हो सकती है ।

नियंत्रण–कॉपर आक्सीक्लोराईड 2 ग्राम प्रतिकिलो पानी में घोलकर छिड़काव करें ।

समन्वितकीट एवंरोगप्रबंधन

1.फसल चक्र अपनायें तथा पिछली फसल के अवशेषों को नष्ट कर दें।

2.बीमारियों के फैलाव का रोकने के लिए बूंद–बूंद सिंचाई विधि अपनाऐं।

3.नत्रजन की अनुमोदित मात्रा का उपयोग करें।

4.खरीफ फसल में जल निकास की व्यवस्था करें तथा रेज्डबेड पर बुवाई करें।

5.थाइरम + कार्बेन्डाजिम (2:1) 3 ग्राम/किलोबीज या ट्राइकोडर्मा 5–6 ग्राम/किलोबीज के हिसाब से बीजोपचार करें।

6.2 किग्राट्राइकोडर्माको 1 क्विंटल सड़ी गोबर की खाद में मिलाकर कुछ दिन रखें तथा उसे एक हैक्टेयर में उपयोग करें।

7.प्रतिरोपण से पहले पौध को 0.025 प्रतिशत कार्बोसल्फ्यूरॉनतथा0.1 प्रतिशत कार्बेन्डाजिम घोलमें 2 घण्टे डुबोकर रखें।

8.प्याज की फसल के चारों तरफ 2 लाइनमक्का की या मक्का एवं गेहूं लगाय ेजिसस ेथ्रिप्स की रोकथाम हो सके।

9.कीट एव ंव्याधि नियंत्रण हेत ुनिम्न छिड़काव करें।

❖ मेन्कोजेब 0.25 प्रतिशत तथा मीथोमिल 0.8 ग्राम/लीटर रोपाई के 30 दिनबाद।

❖ रोपाई के 45 दिन बाद ट्राइसाइक्लाजोल 0.1 प्रतिशत तथा कार्बोसल्फ्यूरॉन 2 मिली/लीटर पानीमें घोलकर छिड़काव करें।

❖ रोपाई के 60 दिन बाद हेक्साकोनाजोल 0.1 प्रतिशत तथा प्रोफेनोफॉस 1 मिली/लीटरपानीमें घोलकर छिड़काव करें।

10.एक ही तरह के कीटनाशक व फफूंद नाशक का दुबारा छिड़काव न करें।

11.आवश्यकतानुसार 10–15 दिन पर छिड़काव करें।

मुंह से बड़े हिरण को निगल गया अफ्रीकी पायथन

अफ्रीका में बड़े-बड़े शिकारी जानवरों का सबसे बड़ा शौक हिरण होता है। कुछ इनकी पीछे दौड़ते हैं और पकड़ कर खा जाते हैं।

कुछ तो इन्हें पूरी तरह से निगल भी जाते हैं।

ऐसा वाकया देखने को मिला बोत्सवाना के जंगलों में। यहां अफ्रीकी रॉक पायथन अपने अपनी भूख को शांत करने के लिए हिरण को निगल गया। आठ फुट लंबे अजगर की यह तस्वीरें मोरमी गेम रिजर्व में ली गई हैं। इन तस्वीरों को नीदरलैंड्स के फोटोग्राफर फ्रेड वोन विंकलमन ने अपने कैमरे में कैद किया है। फ्रेड बताते हैं कि अपना भोजन करने वक्त पायथन काफी शांत दिख रहा था।

गाय 15 दिन बाद खुद पहुंची अपने असली मालिक के घर

झाबुआ. एक गाय-दो दावेदार मामले में पुलिस की तरकीब काम आ गई। गाय ने फैसला किया अपने असली मालिक का। जिस व्यक्ति ने गाय पर अपना मालिकाना हक जताकर उसे 15 दिन तक अपने आंगन में खूंटी से बांधकर रखा, खातिरदारी की, गाय उसके घर नहीं गई। सोमवार को वह अपने घर वापस पहुंच गई। गाय पहले मेघनगर नाके जाकर वापस पलटी। बाद में गाय छतरी चौक होते हुए सज्जन रोड पहुंची। यहां इधर-उधर देखती रही। फिर उसने छोटा तालाब का रास्ता चुना और दोपहर 3.30 बजे छोटा तालाब किनारे स्थित अपने असल मालिक चेतन सतोगिया के घर पहुंच गई। घर में गाय को देख सतोगिया परिवार की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। पूरे परिवार ने गाय को दुलारा और रोटी खिलाई।

मछली बाजार शहर से बाहर जा सकता है

रायपुर. शंकर नगर, अनुपम नगर और राजीव नगर के बीच घनी आबादी में प्रस्तावित हाइजेनिक मछली बाजार अब नहीं बनेगा।

मछली बाजार का मुद्दा प्रमुखता से छाया हुआ था। रेसिडेंट्स एसोसिएशनों और सामाजिक संगठनों के कड़े विरोध के बाद आखिरकार नगर निगम और प्रशासन ने तय किया कि मछली बाजार शहर से बाहर बनाएंगे।

बछड़े की देखभाल

जाने वाले किसी भी द्रव आहार का तापमान लगभग कमरे के तापमान अथवा शरीर के तापमान के बराबर होना चाहिए।

बछड़े को खिलाने के लिए इस्तेमाल होने वाले बरतनों को अच्छी तरह साफ रखें। इन्हें और खिलाने में इस्तेमाल होने वाली अन्य वस्तुओं को साफ और सूखे स्थान पर रखें।

पानी का महत्व

ध्यान रखें हर वक्त साफ और ताजा पानी उपलब्ध रहे। बछड़े को जरूरत से ज्यादा पानी एक ही बार में पीने से रोकने के लिए पानी को अलग-अलग बरतनों में और अलग-अलग स्थानों में रखें।

खिलाने की व्यवस्था

बछड़े को खिलाने की व्यवस्था इस बात पर निर्भर करती है कि उसे किस प्रकार का भोज्य पदार्थ दिया जा रहा है। इसके लिए आमतौर पर निम्नलिखित व्यवस्था अपनाई जाती है:

-बछड़े को पूरी तरह दूध पर पालना

-मक्खन निकाला हुआ दूध देना

-दूध की बजाए अन्य द्रव पदार्थ जैसे ताजा छाछ, दही का मीठा पानी, दलिया इत्यादि देना

-दूध के विकल्प देना

-काफ स्टार्टर देना

-पोषक गाय का दूध पिलाना।

पूरी तरह दूध पर पालना

-50 किलो औसत शारीरिक वजन के साथ तीन महीने की उम्र तक के नवजात बछड़े की पोषण आवश्यकता इस प्रकार है:

सूखा पदार्थ (डीएम) 1.43 किग्रा

पचने योग्य कुल पोषक पदार्थ (टीडीएन) 1.60 किग्रा

कच्चे प्रोटीन 315 ग्राम

-यह ध्यान देने योग्य है कि टीडीएन की आवश्यकता डीएम से अधिक होती है क्योंकि भोजन में वसा का उच्च अनुपात होना चाहिए। 15 दिनों बाद बछड़ा घास टूंगना शुरू कर देता है जिसकी मात्रा लगभग आधा किलो प्रतिदिन होती है जो ३ महीने बाद बढ़कर 5 किलो हो जाती है।

-इस दौरान हरे चारे के स्थान पर 1-2 किलो अच्छे प्रकार का सूखा चारा (पुआल) बछड़े का आहार हो सकता है जो 15 दिन की उम्र में आधा किलो से लेकर 3 महीने की उम्र में डेढ किलो तक दिया जा सकता है। -3 सप्ताह के बाद यदि संपूर्ण दूध की उपलब्धता कम हो तो बछड़े को मक्खन निकाला हुआ दूध, छाछ अथवा अन्य दुग्धीय तरल पदार्थ दिया जा सकता है। बछड़े को दिया जाने वाला मिश्रित आहार

-बछड़े का मिश्रित आहार एक सांद्र पूरक आहार है जो ऐसे बछड़े को दिया जाता है जिसे दूध अथवा अन्य तरल पदार्थों पर पाला जा रहा हो। बछड़े का मिश्रित आहार मुख्य रूप से मक्के और जई जैसे अनाजों से बना होता है।

-जौ, गेहूं और ज्वार जैसे अनाजों का इस्तेमाल भी इस मिश्रण में किया जा सकता है। बछड़े के मिश्रित आहर में 10% तक गुड़ का इस्तेमाल किया जा सकता है।

-एक आदर्श मिश्रित आहार में 80% टीडीएन और 22% सीपी होता है।

नवजात बछड़े के लिए रेशेदार पदार्थ

-अच्छे किस्म के तनायुक्त पत्तेदार सूखे दलहनी पौधे छोटे बछड़े के लिए रेशे का अच्छा स्रोत हैं। दलहन, घास और पुआल का मिश्रण भी उपयुक्त होता है।

-धूप लगाई हुई घास जिसकी हरियाली बरकरार हो, विटामिन-ए, डी तथा बी-कॉम्प्लैक्स विटामिनों का अच्छा स्रोत होती है।

-6 महीने की उम्र में बछड़ा 1.5 से 2.5 किग्रा तक सूखी घास खा सकता है। उम्र बढने के साथ-साथ यह मात्रा बढ़ती जाती है।

-6-8 सप्ताह के बाद से थोड़ी मात्रा में साइलेज़ अतिरिक्त रूप से दिया जा सकता है। अधिक छोटी उम्र से साइलेज़ खिलाना बछड़े में दस्त का कारण बन सकता है।

-बछड़े के 4 से 6 महीने की उम्र के हो जाने से पहले तक साइलेज़ को रेशे के स्रोत के रूप में उसके लिए उपयुक्त नहीं माना जा सकता।

-मक्के और ज्वार के साइलेज़ में प्रोटीन और कैल्शियम पर्याप्त नहीं होते हैं तथा उनमें विटामिन डी की मात्रा भी कम होती है।

पोषक गाय के दूध पर बछड़े को पालना

-2 से 4 अनाथ बछड़ों को दूध पिलाने के लिए उनकी उम्र के पहले सप्ताह से ही कम वसा-युक्त दूध देने वाली और दुहने में मुश्किल करने वाली गाय को सफलतापूर्वक तैयार किया जा सकता है।

-सूखी घास के साथ बछड़े को सूखा आहार जितनी कम उम्र में देना शुरू किया जाए उतना अच्छा। इन बछड़ों का 2 से 3 महीने की उम्र में दूध छुड़वाया जा सकता है।

बछड़े को दलिए पर पालना

-बछड़े के आरंभिक आहार (काफ स्टार्टर) का तरल रूप है दलिया। यह दूध का विकल्प नहीं है। 4 सप्ताह की उम्र से बछड़े के लिए दूध की मात्रा धीरे-धीरे कम कर भोजन के रूप में दलिया को उसकी जगह पर शामिल किया जा सकता है। 20 दिनों के बाद बछड़े को दूध देना पूरी तरह बंद किया जा सकता है।

काफ स्टार्टर पर बछड़े को पालना

-इसमें बछड़े को पूर्ण दुग्ध के साथ स्टार्टर दिया जाता है। उन्हें सूखा काफ स्टार्टर और अच्छी सूखी घास या चारा खाने की आदत लगाई जाती है। 7 से 10 सप्ताह की उम्र में बछड़े का दूध पूरी तरह छुड़वा दिया जाता है।

दूध के विकल्पों पर बछड़े को पालना यह अवश्य ध्यान में रखा जाना चाहिए कि नवजात बछड़े के लिए पोषकीय महत्व की दृष्टि से दूध का कोई विकल्प नहीं है। हालांकि, दूध के विकल्प का सहारा उस स्थिति में लिया जा सकता है जब दूध अथवा अन्य तरल पदार्थों की उपलब्धता बिल्कुल पर्याप्त न हो।

दूध के विकल्प ठीक उसी मात्रा में दिए जा सकते हैं जिस मात्रा में पूर्ण दुग्ध दिया जाता है, अर्थात् पुनर्गठन के बाद बछड़े के शारीरिक वजन का 10% पुनर्गठित दूध के विकल्प में कुल ठोस की मात्रा तरल पदार्थ के 10 से 12% तक होती है।

दूध छुड़वाना

-बछड़े का दूध छुड़वाना सघन डेयरी फार्मिंग व्यवस्था के लिए अपनाया गया एक प्रबन्धन कार्य है। बछड़े का दूध छुड़वाना प्रबन्धन में एकरूपता लाने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक बछड़े को उसकी आवश्यकता अनुसार दूध की मात्रा उपलब्ध हो और दूध की बर्बादी अथवा दूध का आवश्यकता से अधिक पान न हो।

-अपनाई गई प्रबन्धन व्यवस्था के आधार पर जन्म के समय, 3 सप्ताह बाद, 8 से 12 सप्ताह के दौरान अथवा 24 सप्ताह में दूध छुड़वाया जा सकता है। जिन बछड़ों को सांड के रूप में तैयार करना है उन्हें ६ महीने की उम्र तक दूध पीने के लिए मां के साथ छोड़ा जा सकता है।

-संगठित रेवड़ में, जहां बड़ी संख्या में बछड़ों का पालन किया जाता है जन्म के बाद दूध छुड़ाना लाभदायक होता है।

-जन्म के बाद दूध छुड़वाने से छोटी उम्र में दूध के विकल्प और आहार अपनाने में सहूलियत होती है और इसका यह फायदा है कि गाय का दूध अधिक मात्रा में मनुष्य के इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होता है।

दूध छुड़वाने के बाद

दूध छुड़वाने के बाद 3 महीने तक काफ स्टार्टर की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाई जानी चाहिए। अच्छे किस्म की सूखी घास बछड़े को सारा दिन खाने को देना चाहिए। बछड़े के वजन के 3% तक उच्च नमी वाले आहार जैसे साइलेज़, हरा चारा और चराई के रूप में घास खिलाई जानी चाहिए। बछड़ा इनको अधिक मात्रा में न खा ले इसका ध्यान रखना चाहिए क्योंकि इसके कारण कुल पोषण की प्राप्ति सीमित हो सकती है।

बछड़े की वृद्धि

बछड़े की वृद्धि वांछित गति से हो रही है या नहीं इसे निर्धारित करने के लिए वजन की जांच करें।

-पहले 3 महीनों के दौरान बछड़े का आहार बहुत महत्वपूर्ण होता है।

-इस चरण में बछड़े का खानपान अगर सही न हो तो मृत्यु दर में 25 से 30% की वृद्धि होती है।

-गर्भवती गाय को गर्भावस्था के अंतिम 2-3 महीनों के दौरान अच्छे किस्म का चारा और सांद्र आहार दिया जाना चाहिए।

-जन्म के समय बछड़े का वजन 20 से 25 किग्रा होना चाहिए।

-नियमित रूप से कृमिनाशक दवाई दिए जाने के साथ-साथ उचित आहार दिए जाने से बछड़े की वृद्धि दर 10-15 किग्रा प्रति माह हो सकती है।

बछड़े के रहने के स्थान का महत्व

बछड़ों को अलग बाड़े में तब तक रखा जाना चाहिए जब तक कि उनका दूध न छुड़वा दिया जाए। अलग बाड़ा बछड़े को एक दूसरे को चाटने से रोकता है और इस तरह बछड़ों में रोगों के प्रसार की संभावना कम होती है। बछड़े के बाड़े को साफ-सुथरा, सूखा और अच्छी तरह से हवादार होना चाहिए। वेंटिलेशन से हमेशा ताजी हवा अन्दर आनी चाहिए लेकिन धूलगर्द बछड़ों के आंख में न जाएं इसकी व्यवस्था करनी चाहिए।

बछड़े के रहने के स्थान पर अच्छा बिछौना होना चाहिए ताकि आराम से और सूखी अवस्था में रह सकें। लकड़ी के बुरादे अथवा पुआल का इस्तेमाल बिछौने के लिए सबसे अधिक किया जाता है। बछड़े के ऐसे बाड़े जो घर के बाहर हों, आंशिक रूप से ढके हुए और दीवार से घिरे होने चाहिए ताकि धूप की तेज गर्मी अथवा ठंडी हवा, वर्षा और तेज हवा से बछड़े की सुरक्षा हो सके। पूरब की ओर खुलने वाले बाड़े को सुबह के सूरज से गर्मी प्राप्त होती है और दिन के गर्म समयों में छाया मिलती है। वर्षा पूरब की ओर से प्राय: नहीं होती।

बछड़े को स्वस्थ्य रखना

नवजात बछड़ों को बीमारियों से बचाकर रखना उनकी आरंभिक वृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इससे उनकी मृत्यु दर कम होती है, साथ ही बीमारी से बचाव बीमारी के इलाज की तुलना में कम खर्च में किया जा सकता है। बछड़े का नियमित निरीक्षण करें, उन्हें ठीक तरह से खिलाएं और उनके रहने की जगह और परिवेश को स्वच्छ रखें।

फरवरी माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुशाला व पशुओं की सफाई नियमित करें।
- गाय व भैंस के ताव में आने पर उत्तम नस्ल के साँड व झोटे से समय पर गाभिन करवाएँ।
- गाय व भैंस के दो से तीन माह की गाभिन होने पर पशु–चिकित्सक से गर्भ का परीक्षण (चैक) अवश्य करवाएँ।
- ब्याँने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखते हुए अन्य पशुओं से अलग रखें।
- नवजात बछडे–बछड़ियों व कटडे–कटिड़ियों को अन्तः परजीवी नाशक दवाई पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।
- दुधारु पशुओं को थनैला रोग से बचाने के लिए दूध पूरा व मुट्ठी बांध (फुल मिल्किंग) कर निकाले।
- बरसीम फसल की आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- बरसीम व जई फसल की सही अवस्था पर चारे के लिए कटाई करते रहें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का

नाम:.....

संस्था का

नाम:.....

पूरा पता:.....

ग्राम :.....तहसील :.....

जिला:.....राज्य:.....पिन कोड

दूरभाष कार्य:.....निवास:.....

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 ☐ तीन वर्ष :351 ☐ पांच वर्ष :501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :.....

बैंक का नाम:..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक:.....दिनांक:.....

स्थान:..... प्रतिनिधि का नाम:.....हस्ताक्षर सदस्य:.....

दिनांक:.....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

S.S.AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals

CONTACT NO.-022-6710-3722

EMAIL:aarti@hindchem.com

कद्दूवर्गीय सब्जियों की वैज्ञानिक खेती

डॉ. राकेश कुमार शर्मा
डॉ. स्वप्निल दुबे
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)

हमारे देश में उपयोग में ली जाने वाली सब्जियों में कद्दूवर्गीय सब्जियों का प्रमुख स्थान है इसमें लौकी, तुरई, गिलकी, तरबूज, खरबूजा, खीरा, ककड़ी, करेला, कद्दू, टिण्डा आदि प्रमुख हैं। पोषण की दशष्टि से ये बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि इनमें बहुत ही आवश्यक विटामिन, खनिज तत्व पर्याप्त मात्रा में पाए जाते हैं,

जलवायुः– कद्दूवर्गीय सब्जियाँ गर्म मौसम की फसलें हैं, इनकी अच्छी वश्द्धि के लिये 15 से 35 डिग्री सेन्टीग्रेड उपयुक्त रहता है। इनकी खेती गर्मी व वर्षा ऋतुओं में की जाती है।

भूमिः– कद्दूवर्गीय सब्जियों की खेती के लिये उचित जल निकास युक्त दोमट मिट्टी अच्छी रहती है लेकिन उचित प्रबंधन द्वारा इन फसलों को दोमट से रेतीली तक सभी प्रकार की भूमि में सफलतापूर्वक उगा सकते हैं।

खाद एवं उर्वरक

देशी खाद, फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 1-3 मात्रा बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें तथा शेष नत्रजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर टोप ड्रेसिंग ;खड़ी फसल मेंद्ध के रूप में प्रथम बार बुवाई के २५ से 30 दिन बाद व दूसरी बार फूल आने के समय देना चाहिये।

बुवाई का समय : बसंत–गर्मी की फसल बुवाई फरवरी–मार्च में करते हैं तथा वर्षा के मौसम के लिए जून के अंत से जुलाई माह में करते हैं।

बीज बुवाई : खेत में लगभग 45 सें.मी. चौड़ी तथा 30-40 सें.मी. गहरी नालियां बना लें। एक नाली से दूसरी नाली की दूरी फसल की बेल की बढ़वार के अनुसार 1-5 मी. से 5 मी. तक रखें। बुवाई से पहले नालियों में पानी लगा दें। जब नाली में नमी की मात्रा बीज बुवाई के लिए उपयुक्त हो जाए तो बुवाई के स्थान पर मिट्टी भुरभुरी करके 0-50 से 1-0 मी. की दूरी पर बीज बोएं।

पॉली हाउस विधि से अगेती खेती : कद्दूवर्गीय सब्जियों की उत्तर भारत के मैदानी क्षेत्रों में गर्मी के मौसम के लिए अगेती फसल तैयार करने के लिए पॉली हाउस में जनवरी माह में झोंपड़ी के आकार का पॉली हाउस बनाकर पौध तैयार कर लेते हैं। पौधे तैयार करने के लिए १५.१० सें. मी आकार की पॉलीथीन की थैलियों में १:१:१ मिट्टी, बालू व गोबर की खाद भरकर जल निकास की व्यवस्था हेतु सूजे की सहायता से छेद कर लेते हैं। बाद में इन थैलियों में लगभग 1 सें.मी. की गहराई पर बीज की बुवाई करके बालू की पतली परत बिछा लेते हैं तथा हजारे की सहायता से पानी लगाते हैं। लगभग ४ सप्ताह में पौधे खेत में लगाने के योग्य हो जाते हैं। जब फरवरी माह में पाला पड़ने का डर समाप्त हो जाये तो पॉलीथीन की थैली को ब्लेड से काटकर हटाने के बाद पौधे की मिट्टी के साथ खेत में बनी नालियों की मेंड पर रोपाई करके पानी लगाते हैं। इस प्रकार लगभग एक से डेढ़ माह बाद अगेती फसल तैयार हो जाती है जिससे किसान अगेती फसल तैयार करके ज्यादा लाभ कमा सकता है।

फसल सुरक्षा

कीट नियंत्रणः–

१) लाल भृंग (रेड पंपकिन बीटल)– यह लाल रंग का छोटा कीट होता है तथा अंकुरित तथा नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। इसके प्रकोप से कई बार पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

प्रबंधन

1- फसल खत्म होने पर बेलों को खेत से हटाकर नष्ट कर दें।
2- फसल की अगेती बुवाई से कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
3. संतरी रंग के भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
४. कार्बेरिल ५० डब्ल्यू.पी. 2 ग्राम/लीटर या एन्डोसल्फान 35 ई.सी. 2 मि. ली/लीटर या एमामेक्टिन बैंजोएट ५ एस.जी. १ ग्राम/२ लीटर या इन्डोक्साकार्ब १४.५ एस.सी. १ मि.ली./२ लीटर का छिड़काव करें।
५. भूमिगत शिशुओं के लिए क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 2-५ लीटर/हेक्टेयर हल्की सिंचाई के साथ इस्तेमाल करें।

२) फल मक्खीः– इस कीट की मक्खी फलों में अंडे देती है तथा शिशु अंडे से निकलने के तुरंत बाद फल के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंगें बना देते हैं।

प्रबंधन

1. ग्रसित फलों को भी एकत्रित करके नष्ट कर दें।
2- मैलाथियॉन 5- ई सी या डाईमिथोएट 30 ई सी एक मिलीलीटर का प्रति लीटर पानी की दर से छिड़कव करें। आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन बाद छिड़काव को दोहरावें।

३. सफेद मक्खी (व्हाइट फलाई)

इस कीट के शिशुओं व वयस्कों के रस चूसने से पत्ते पीले पड़ जाते हैं। इनके मधुबिन्दु पर काली फंफूद आने से पौधों की भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है। इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17-8 एस.एल. 1 मि.ली. -3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ईसी. 2 मि.ली./लीटर का छिड़काव करें।

4- चेंपा (एफिड) चेपा लगभग सभी कद्दू वर्गीय फसलों पर आक्रमण करते हैं। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17-8 एस.एल. 1 मि.ली.3 लीटर या डाइमेथोएट 30 ई.सी. 2 मि.ली./लीटर या क्वनलफॉस 25 ई.सी. 2 मि.ली/लीटर का छिड़काव करें।

रोग नियंत्रणः–

1 पाउडरी मिल्डयू (तुलासिता)– पत्तियों की ऊपरी सतह पर हल्के पीले धब्बे दिखाई देते हैं तथा नीचे की सतह पर कवक की वश्द्धि दिखाई देती है।

नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 2 ग्राम या डायनोकेप 1-0 मिली. या मेन्कोजेब २ ग्राम/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

2 एन्थ्रेक्नोजः– इस बीमारी की वजह से फलों एवं पत्तियों पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे बन जाते हैं रोग ग्रस्त भाग सूखने लगता है।

रोकथाम के लिए मेन्कोजेब २ ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।

) विषाणु रोग

विषाणु रोग एफिड्स से संचारित होता है तथा रोग का आक्रमण होने पर पत्ती की लम्बाई चौड़ाई कम हो जाती है। ग्रसित पौधे के फल भद्दे रंग के व बेडोल आकार के हो जाते है।

नियंत्रण हेतु रोग के लक्षण दिखाई देते ही पौधे को उखाड़ कर जला देवें।

विषाणु ग्रसित पौधे से बीज प्राप्त न करें। रोग रोधी किस्म का चुनाव करें। मोयले की रोकथाम के लिये फास्फोमिडान 85 एस एल 0-3 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से 10 से 15 दिन के अन्तर पर छिड़काव करें।

मधुमक्खी पालन – लाभकारी व्यवसाय

कृषि विज्ञान केन्द्र, भिवानी
निर्मल कुमार, दलीप कुमार, सतीष मेहता, अत्तर सिंह

भारत में 60–65 प्रतिशत जनसख्या खेती पर आधारित है। किसानों की जोत घटती जा रही है इसलिए किसान खेती के अलावा अन्य धंधे जैसे मधुमक्खी पालन, मशरूम उत्पादन, पशुपालन, मछली पालन, मुर्गी पालन और भेड़ व बकरी पालन आदि व्यवसाय आरम्भ करके अधिक लाभ कमा सकते हैं। इनमें से मधुमक्खी पालन किसानों के लिए खेती के अलावा अतिरिक्त आमदनी का एक उत्तम व्यवसाय है। यह एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें जमीन की आवश्यकता नहीं होती, भूमिहीन कम पढ़े लिखे, अनपढ़ व महिलाएं भी इस रोजगार को अपना सकते हैं। इसके लिए हरियाणा में जिला स्तर पर कषषि विज्ञान केन्द्र तथा हरियाणा कषषि विश्वविद्यालय, हिसार में समय–समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है। जिसमें आप प्रशिक्षित होकर इस व्यवसाय को आसानी से अपना सकते हैं। पुरू में छोटे मौनालय (10–12 वंषों) का चयन करना चाहिए। आधुनिक मधुमक्खी पालन की विधियों से मधुमक्खी पालक मौनवंष की उत्तम व्यवस्था कर सकते हैं तथा बढ़िया और अधिक षहद पैदा कर सकते हैं। इससे फसलों में परपरागण द्वारा पैदावार में बढ़ोतरी होती है। शहद में लगभग 75 प्रतिशत शर्करा होती है जिसमें से फ्क्टोस, ग्लूकोज, सुल्फोज, माल्टोज व लेक्टोज आदि प्रमुख हैं। इसमें अन्य पदार्थों के रूप में प्रोटीन, वसा, एन्जाइम भी पाया जाता है। यही नहीं शहद में विटामिन ए, बी–1, बी–2, बी–3, बी–5, बी–6, बी–12 तथा अल्प मात्रा में विटामिन सी, विटामिन एच और विटामीन के भी पाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें लोहा, फास्फोरस, कैल्शियम और आयोडीन भी पाए जाते हैं। दूध के बाद शहद में वे सभी तत्व पाए जाते हैं जो संतुलित आहार में होने चाहिए। शहद नेत्र ज्योति को बढ़ाता है, प्यास को शांत करता, कफ को घोलकर बाहर निकालता और शरीर में विषाक्तता को कम करता है। यह वात और कफ को नियंत्रित करता है तथा रक्त व पित्त को सामान्य रखता है। इतना ही नहीं यह मूत्रमार्ग में उत्पन्न व्याधियों तथा निमोनिया, खॉसी, डायरिया और दमा आदि में बहुत उपयोगी होता है।

भारतीय उप.महाद्वीप में मधुमक्खियों की प्रमुख प्रजातियाँ

भारतीय उपमहाद्वीप में मधुमक्खियों की प्रमुख 4 प्रजातियाँ हैं। पहाड़ी या सारंग मधुमक्खी से औसतन 30–35 किलोग्राम षहद प्रति छत्ता मिल सकता है। छोटी या मूंगा मधुमक्खी के एक वंष से वर्श भर में षहद पैदा करने की क्षमता एक या डेढ़ किलोग्राम ही है। भारतीय मधुमक्खी से लगभग 7–10 किलोग्राम षहद प्रति वर्श प्रति वंष प्राप्त किया जा सकता है। इटालियन मधुमक्खी से 40–50 किलोग्राम षहद प्रति वंष प्राप्त किया जा सकता है। भारत में विशेषतः हरियाणा राज्य में इटालियन मधुमक्खियॉ ही पाली जाती हैं।

मधुमक्खियां आपस में मिलजुलकर कार्य करती हैं जिसके कारण इन्हें सामाजिक कीट कहा जाता है। मधुमक्खी के पूरे परिवार में एक रानी मक्खी, कई हजार कमेरी मक्खियां तथा सैंकड़ों की संख्या में नर मक्ख्यिां (निखट्टू) होते हैं। मधुमक्खी परिवार के प्रत्येक सदस्य का अपना अलग–अलग कार्य होता है। अण्डे से लेकर युवावस्था षुरू होने तक रानी का जीवन चक्र 15–16 दिनों में, कमेरी का 20–21 दिनों में तथा नर का जीवन चक्र 23–24 दिनों में पूरा हो जाता है।

मधुमक्खी वंषों की प्रगति जानने के लिए आमतौर पर इनका 15–20 दिन के अन्तर पर अवलोकन करना चाहिए परन्तु वकछूट के मौसम (जनवरी से अप्रैल) में 6–7 दिन के अन्तराल पर अवलोकन करना आवष्यक है। हरियाणा प्रदेष में विभिन्न महीनों में मधुमक्खी वंषों की देखभाल ऋतुओं के अनुसार जैसे मानसून के बाद/सर्दी से पहले, सर्दी का समय, बसन्त व गर्मी की षुरूआत, गर्मी व बरसात में मधुमक्खी पालन विषेशज्ञ द्वारा बताए गये सुझावों को ध्यान में रखकर करें।

मुख्य फसल व क्षेत्र

मधुमक्खियॉ शहद उत्पादन के लिए फसलें जैसे सरसों, चना, मेथी, बरसीम, शीशम, नीम, जामुन, सफेदा, बेर, सूरजमुखी, बाजरा, कपास, तिल अथवा अरहर आदि के फूलों से मकरंद लेकर मधु का संचय करती है। दक्षिण–पश्चिम हरियाणा के हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, रेवाड़ी, गुड़गांव जिलों के रबी के मौसम में सरसों के अन्तर्गत बहुत बड़ा क्षेत्रफल है इसलिए इन क्षेत्रों में इस मौसम में यह व्यवसाय विशेष तौर पर बहुत ही लाभदायक साबित होता है। मधुमक्खी पालन से ज्यादात्तर मुनाफा शहद उत्पादन के माध्यम से अर्जित किया जाता है। इसके अलावा अन्य उत्पाद जैसे मोम, राज अवलेह, पराग, मधुमक्खी विष तथा मोन वंश बेचकर भी लाभ कमाया जा सकता है। मधुमक्खी पालन में आय लागत अनुपात इस प्रकार है।

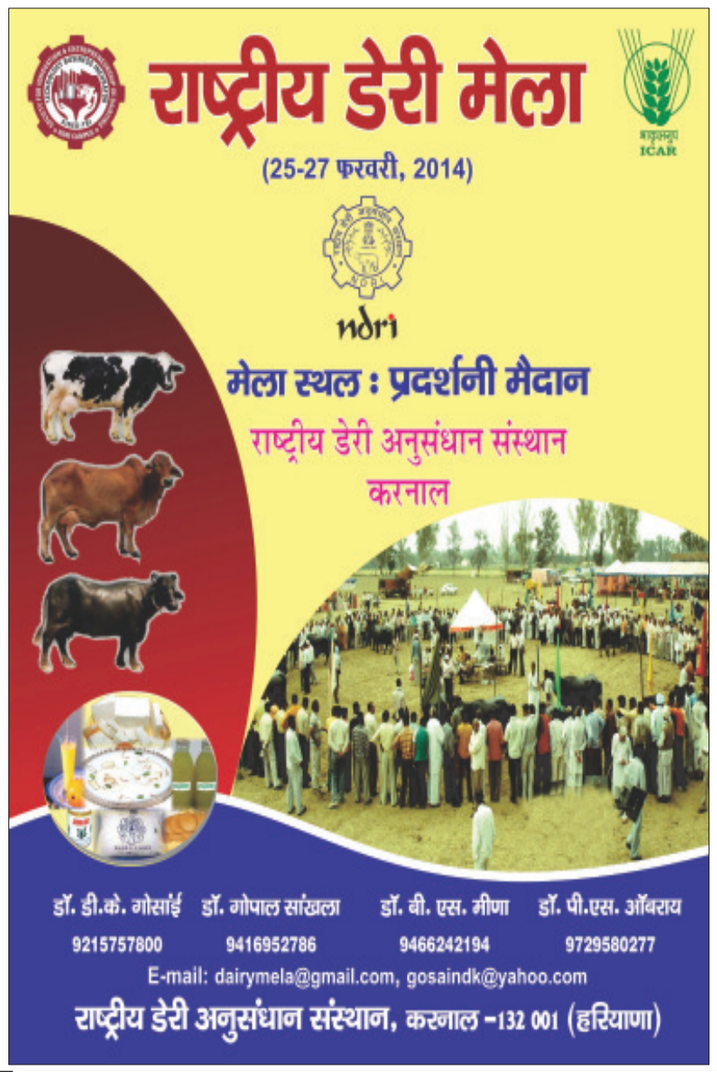

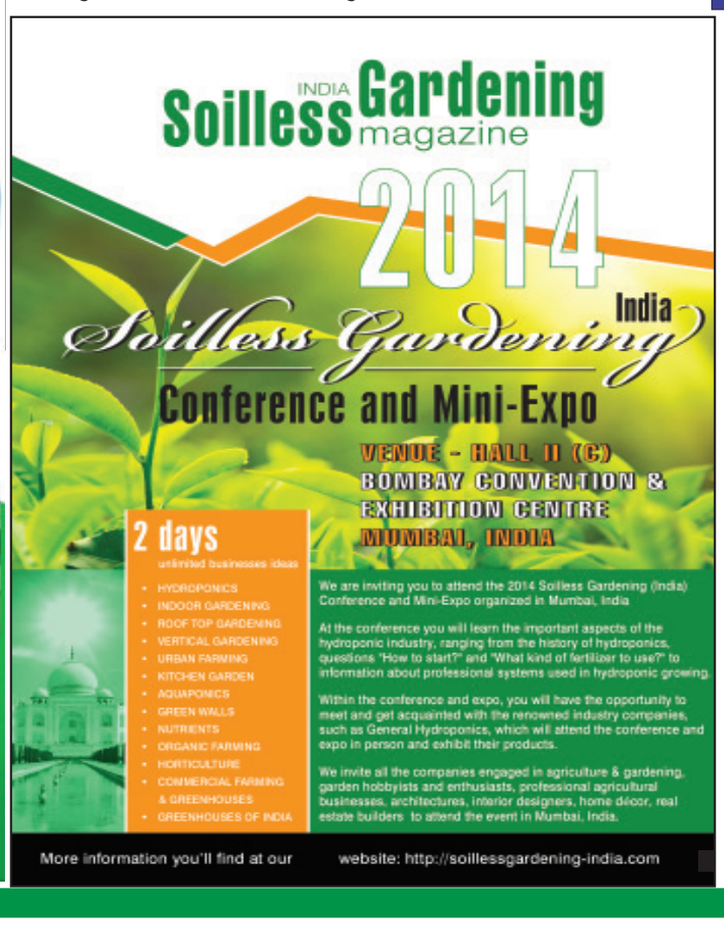

मंथन

डेरी उद्योग में रोजगार के अवसर

भारत गांवों में बसता है। हमारी 72 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या ग्रामीण है तथा 60 प्रतिशत लोग कृषि व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। दूध देने वाले पशुओं का पालन हजारों वर्षों से होता आ रहा है. प्रारंभ में, इनका उपयोग निर्वाह खेती के लिए खानाबदोश द्वारा किया जाता था. जब भी पूरा समुदाय दूसरे देश में स्थानान्तरण करता था ये उनके साथ होते थे. जानवरों की रक्षा करना और खिलाना यह जानवरों और चरवाहों के बीच सहजीवी सम्बन्ध का एक बड़ा हिस्सा था.

हाल के अतीत में, कृषि करने वाले समाज के लोग दुधारू जानवरों को कुटीर उद्योग के रूप में घरेलू और स्थानीय (गांव) में दूध की खपत के लिए पालते थे. जानवर कई प्रकार से इनके लिए उपयोगी हैं, उदाहरण के लिए जवानी के समय इनके लिए हल खींचते हैं और मरणोपरान्त इसका मांस उनलोगों के लिए उपयोगी होता है. औद्योगिककरण और शहरीकरण के साथ, दूध की आपूर्ति ने वाणिज्यिक उद्योग का रूप ले लिया है

डेरी फार्मिंग के अंतर्गत दूध देने वाले मवेशियों का प्रजनन तथा देखभाल, दूध की खरीद और इसकी विभिन्न डेरी उत्पादों के रूप में प्रोसेसिंग आदि कार्य सम्मिलित हैं। भारतीय दुग्ध उत्पादन से जुड़े महत्वपूर्ण सांख्यिकी आंकड़ों के अनुसार देश में 70 प्रतिशत दूध की आपूर्ति छोटे/ सीमांत/ भूमिहीन किसानों से होती है। भारत में कृषि भूमि की अपेक्षा गायों का ज्यादा समानता

पूर्वक वितरण है। भारत की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने में डेरी-उद्योग की प्रमुख भूमिका है।

देश में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में इसे मान्यता दी गई है। कृषि और डेरी-फार्मिंग के बीच एक परस्पर निर्भरता वाला संबंध है। कृषि उत्पादों से मवेशियों के लिए भोजन और चारा उपलब्ध होता है जबकि मवेशी पोषण सुरक्षा माल उपलब्ध कराने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के दुग्ध उत्पादों दूध, घी, मक्खन, पनीर, संघनित दूध, दूध का पाउडर, दही आदि का उत्पादन करता है। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारत का अपना विशेष स्थान है और यह विश्व में सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक और दुग्ध उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक देश है। संयोग से भारत विश्व में सबसे कम खर्च पर यानी 27 सेंट प्रति लीटर की दर से दूध का उत्पादन करता है यदि वर्तमान रूझान जारी रहता है तो मिनरल वाटर उद्योग की तरह दुग्ध प्रोसेसिंग उद्योग में भी बहुत तेजी से विकास होने की पर्याप्त संभावनाएं हैं। अगले 10 वर्षों में तिगुनी वृद्धि के साथ भारत विश्व में दुग्ध उत्पादों को तैयार करने वाला अग्रणी देश बन जाएगा। देश भर में फैले 22 स्टेट को-ऑपरेटिव डेरी फेडरेशन के 400 डेरी प्लांटो और 70000 से ज्यादा डेरी को-ऑपरेटिव में इन पेशेवरों की जरूरत पड़ती है। इनके अलावा मिल्क प्रोसेसिंग और इनसे नए-नए आहार तैयार करने वाली कंपनियों में भी इनके लिए पर्याप्त संभावनाएँ हैं।ये उद्योग गांव से निकल कर शहरो तक अपने पैर पसार रहा है!इसके उज्ज्वल भविष्य के लिये इसकी आवश्यकता को समझना होगा व इस परम्परागत उध्योग को बडावा देने के लिये सही योजनाओ के साथ आगे आना होगा!

ऋतु कपिल

(कार्यकारी संपादक)

ग्वारपाठा

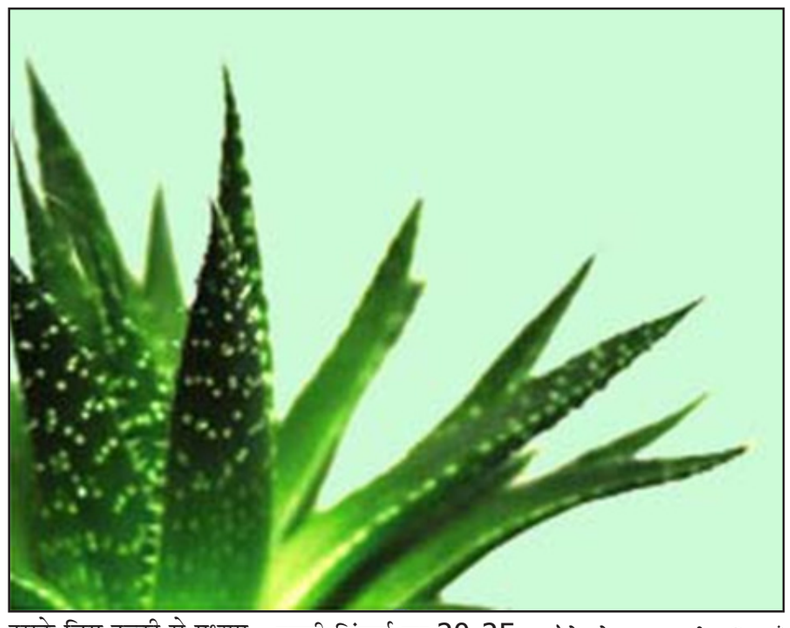

इसके लिए हल्की से मध्यम किस्म की दुमट, बलुई दुमट, कछारी (एलूवियल) मिट्टी वाले खेत ही चुनें। भारी और चिकनी मिट्टी में बरसात में पानी भरा रहने पर फसल खराब हो सकती है। खेत बखरने के बाद पाटा अथवा पठार चलाकर खेत को समतल करें। इसी समय 200 से 250 क्विंटल गोबर की अच्छी तरह पची और पकी हुई (फरमेंटेड) खाद या शहरी कम्पोस्ट खाद खेत में जगह-जगह ढेरियाँ बनाकर समान रूप से बिखेर दें। इसके बाद दाँतेदार बखर (स्पाइक टुथ हेरो) या दतारी चलाकर उसे मिट्टी के साथ अच्छी तरह मिला दें। यदि उपलब्ध हो तो एक बार रोढोवेटर चलाएँ। बुवाई के लिए डेढ़ से दो फुट की दूरी पर नौ से बारह इंच ऊँची मेढ़ व नालियाँ बनाएँ। शिशु पौधों को एक फुट की दूरी पर लगाया जाता है। लगभग 22 हजार पौधे एक एकड़ के लिए चाहिए। भारी व उपजाऊ मिट्टी में इन्हें कतार में दो फुट व पौधों के बीच डेढ़ फुट की दूरी पर लगाया जाना चाहिए। इस अंतर पर प्रति एकड़ लगभग १५ हजार पौधों की जरूरत होती है। बोवनी के तत्काल बाद एक हल्की सिंचाई कर 20-25 दिन बाद 25 किलोग्राम यूरिया, 50 किग्रा सुपर फास्फेट व 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाकर नालियों में डालकर गुड़ाई कर हल्की सिंचाई कर दें। खरपतवारों को निकालने व पौधों के जड़ क्षेत्र में वायु का संचार के लिए आवश्यकतानुसार निंदाई व गुड़ाई करते रहें। जड़ें खुली दिखें तो उन पर मिट्टी चढ़ाते रहें। ग्वारपाठा के पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती है, परंतु खेत में हल्की नमी बनी रहे व दरारें नहीं पड़ना चाहिए। इससे पत्तों का लुबाब सूख कर सिकुड़ जाते हैं। बरसात के मौसम में संभालना ज्यादा जरूरी होता है। खेत में पानी भर जाए तो निकालने का तत्काल प्रबंध करें। लगातार पानी भरा रहने पर इनके तने (पत्ते) और जड़ के मिलान स्थल पर काला चिकना पदार्थ जमकर गलना शुरू हो जाता है।खुश्क मौसममें इनका विकास अच्छा होता है। पौधे को पूर्ण विकसित होने में आठ से बारह महीने लग जाते हैं। इसके पौधे की पत्तियों के पूरी तरह बढ़ जाने पर तेजधार वाले चाकू से काट लिया जाता है। इसी पौधे से पुनः नई पत्तियाँ आने लगती हैं। जब नई पत्तियाँ आने लगे, उस समय 40 किग्रा नत्रजन, 30 किलो स्फुर व 20 किग्रा पोटाश प्रति एकड़ से हिसाब से नालियों की मिट्टी के साथ मिलाकर सिंचाई कर दें।

एक बार लगाने पर तीन से पाँच साल तक उपज ली जा सकती है। पत्तियों को काटने के बाद दोनों तरफ से काँटे निकाल दें। इसके बाद पत्तों को खड़ा चीरकर बीच का लसीला गूदा अलग बर्तन में एकत्र कर लें। इसे धूप में सूखाकर या बिजली से चलने वाले यांत्रिक सुखावकों में रखकर सुखाया जाता है। यदि क्रीम, पेस्ट या आयुर्वेदिक द्रव या तरल उत्पाद बनाना हो तो इस लुबाब को ऐसे ही उपयोग में लाया जाता है। उस उत्पाद के अनुसार उसका प्रसंस्करण कर लिया जाता है।यदि ग्वारपाठे के एक स्वस्थ पौधे से 400 ग्राम (मिली) गूदा भी निकले तो एक एकड़ के 20000 पौधों से 8000 किग्रा गूदा प्राप्त होगा। यदि इसका कम से कम बिक्री भाव 100 रु. प्रति किग्रा भी लगाया जाए तो आठ लाख रुपए होता है। ये सब अनुमानित आकलन है।

खुम्ब फसल में सूत्रकृमियों से नुकसान व इनकी रोकथाम

सतीश कुमार मैहता और अत्तर सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, भिवानी – 127 021

सूत्रकृमि (निमाटोड) बारीक धागों की तरह सूक्ष्मजीव होते हैं जिन्हें केवल सूक्ष्मदर्शी यन्त्र से ही देखा जा सकता है। ये सूक्ष्मजीव खुम्ब के कवक को खाते हैं और कवक जाल का फैलाव रुक जाता है और धीरे–धीरे खत्म हो जाता है। ये अपना जीवन चक्र 5–7 दिन में पूरा कर लेते हैं जिससे इनकी संख्या कम्पोस्ट में बहुत तेजी से बड़ती है। सूत्रकृमि कम्पोस्ट मे अण्डें देते हैं। कम्पोस्ट में यद्यपि कई प्रकार के सूत्रकृमि मिलते हैं लेकिन प्रायः दो प्रकार के सूत्रकृमि खुम्ब की फसल को नुकसान पहुंचाते हैं।

परजीवी सूत्रकृमि

यह सूत्रकृमि खुम्ब की कोशिकाओं से रस चूसकर उन्हें नष्ट कर देते हैं। हरियाणा में परजीवी सूत्रकृमियों में एफलैंकोयडस की कई प्रजातियां खुम्ब को नुकसान पंहुचाती हैं।

मृतभक्षी निमाटोड

यह निमाटोड कम्पोस्ट से अपना भोजन प्राप्त करते हैं लेकिन खुम्ब के जाले को भी हानि पहुंचाते हैं। यह जीवाणु कम्पोस्ट में जहरीले तत्व व गन्दगी भी छोड़ते हैं जिससे खुम्ब का जाला मर जाता है।

सूत्रकृमियों का स्त्रोत : जहा पर खुम्ब की खेती की जाती है उस जगह पर सूत्रकृमि निम्न स्रोतों से पहुंचते हैं–

जमीन द्वारा ।

केसिंग मिट्टी को जीवाणु रहित न करने द्वारा।

अपास्तुरीकृत कम्पोस्ट के इस्तेमाल द्वारा।

पुरानी रोगग्रस्त पेटियां या बैड के इस्तेमाल से।

इस्तेमाल होने वाले औजारों द्वारा।

काम करने वाले मनुष्यों के जूतों में लगी मिट्टी द्वारा।

खुम्ब भवन के पास फेंकी गई पुरानी रोगग्रस्त कम्पोस्ट द्वारा।

प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए गए पानी के छिड़काव द्वारा।

हवा व मक्खियों द्वारा।

सूत्रकृमि क्षति के लक्षण : खुम्ब उत्पादक शुरू में इन सूत्रकृमि के नुकसान व इनके लक्षण ठीक ढंग से पहचान कर लें

इसके प्रकोप को काफी हद तक रोका जा सकता है। यदि शुरू में ध्यान दिया जाए तो ग्रसित खुम्बों में निम्नलिखित लक्षण देखे जा सकते हैं :–

कवक जाल का हल्का और चकतों में फैलना।

खाद की सतह का धंसना।

खाद में भूरे या काले धब्बे नजर आना।

बढ़ते कवक जाल के सफेद रंग का धीरे–धीरे भूरा होना।

खुम्ब का कम और देर से उत्पादन होना।

उत्पादन में गिरावट होना।

खुम्बी की तुड़ाई की सख्या में कमी आना।

अधिक ग्रसित कम्पोस्ट में पूरी फसल का असफल होना।

रोकथाम के उपाय

कम्पोस्ट पक्के फर्श या प्लास्टिक की चादरों पर बनायें।

खुम्ब भवन व आसपास की सफाई का पूरा ध्यान रखें।

छिड़काव के लिए किये जा रहे पानी को ब्लीचिंग पाउडर 0.01 प्रतिशत से उपचारित करें।

खुम्ब भवन में काम आने वाले औजारों को प्रयोग करने से पहले 2–3 मिनट उबलते गर्म पानी या 5 प्रतिशत फार्मेलिन के घोल से उपचारित कर लें।

उपकरणों, दीवारों, फर्श आदि को फार्मेलिन 5 प्रतिशत के घोल से उपचारित करें।

सफेद बटन खुम्ब–ढींगरी फसल चक्र अपनायें।

पुरानी कम्पोस्ट को केसिंग के लिए काम में न लें।

खुम्ब घरों की खिड़कियों व दरवाजों पर बारीक जालियां लगाएं।

आप जितनी ज्यादा जिम्मेदारी लेने
के लिए तैयार रहते हैं, उतने ही
अधिक लोगों के विश्वसनीय बनते हैं।

-पीट मेराविच

उन सभी कारणों को भूल जाएं
कि कोई कार्य नहीं होगा आपको
केवल एक अच्छा कारण खोजना
है कि यह कार्य सफल होगा।

- डॉ. राबर्ट

सूचना

पाक्षिक समाचार पत्र सृष्टि एग्रो में प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों व लेखो में समाविष्ट सभी बातों की जाँच-परखकर पाना सँभव नही है विज्ञापनों में अपने उत्पादनों अथवा अपनी सेवाओं के बारे में विज्ञापनदाता जो दावे करते है ,सृष्टि एग्रो समाचारपात्र उसकी कोई गारंटी नही लेता. विज्ञापनों में किए गए दावो की पूर्ति यदि विज्ञापनदाता द्वरा नही होती है तो उसके लिए पाक्षिक सृष्टि एग्रो समाचारपत्र समूह के मुद्रा , संपादक ,प्रकाशक व मालिक किसी भी रूप में जवाबदेह नही होंगे,कृपया इसे ध्यान में रखे. अत: हम पाठकों से अनुरोध करते है कि विज्ञापन में उलेखित बातों के संदर्भ में कोई भी करार करने के पूर्व उसके बारे में आवश्यक छानबीन कर ले.

(पाक्षिक राशि फल)

1–02–2014 से

15–02–2014

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	सूख प्राप्ति,धन लाभ,यात्रा योग,विरोधियों से सन्धि!
BKT	धन लाभ,शान्ति पूर्ण समय,कल्याण प्राप्ति योग!
CLU	शान्ति पूर्ण समय,अनेक लोगों से संपर्क,विरोधी परास्त!
DMV	कलह,धन लाभ,बन्धु विरोध,स्त्री द्वारा लाभ प्राप्ति योग!
NEW	उदार रोग,गिराने से चोट का भय,सावधानी रखे
FOX	स्वास्थ नरम, उदार रोग , शान्ति पूर्ण समय !
GPY	धन हानि,लाभ कम,मानसिक चिंतन का समय
HQZ	मानसिक अशांति,भाईबंधु में विरोध ,कष्टपूर्ण समय
IR	सम्मान , धन लाभ , मित्रों द्वारा सहयोग, लाभपूर्ण समय

सेब के लाभ

प्राकृतिक दृष्टि से मीठा सेब गर्म व आर्द्र होता है जबकि खट्टा सेब ठंडा एवं शुष्क होता है परंतु खट्टा मीठा सेब संतुलित और थोड़ा शष्क होता है। सेब के पेड़ का समस्त भाग ठंडा व शुष्क होता है और उसके पत्ते और फल में विष विरोधी शक्ति होती है।

सेब की कुछ विशेषताएं इस प्रकार है कच्चा सेब खाने से कब्ज़ होता है और वह दस्त को ठीक कर देता है। सेब एक प्राकृति दातून है जो दातों की सफाई के अतिरिक्त संक्रमण रोधी होता है और दातों को मज़बूत करता है। सेब का पत्ता मूत्रवर्धक है और उसके पत्ते से बने हुए काढ़े का प्रयोग गुर्दे का वरम एवं उससे जड़ी समस्याओं के उपचार के लिए होता हे सेब खाने से भूख बढ़ती है। सेब खाने से भय और अनिद्रा जैसी समस्याओं को दूर करने में सहायता मिलती है। फंसी हुआ आवाज़ के उपचार के लिए सेब खाते हैं और इसी प्रकार खांसी, बवासीर, स्नायुतंत्र से जुड़ी बीमारियों और मोटापे की समस्या से ग्रस्त लोगों के उपचार में भी सेब का सेवन बहुत लाभदायक है। सेब में विटामिन ए बी और सी पाइ जाती है जो आंख, चमड़ा, बाल और नाखून की मज़बूती के लिए बहुत लाभदायक है। गुर्दे की पथरी निकालने में सेब का सेवन प्रभावी है। सेब को उसके छिलके के साथ खाना चाहिये क्योंकि जो विटामिन पूरे सेब में होती है उससे गुना अधिक विटामिन केवल उसके छिलके में होती है। पका हुआ सेब खाने से नींद आती है और उससे आराम मिलता है। सेब खाने से बदहज़मी व अपच की समस्या दूर करने में सहायता मिलती है। ज़ुकाम और काली खांसी के उपचार के लिए सेब के शर्बत का प्रयोग होता है। सेब के सेवन से जोड़ों के दर्द को दूर करने में सहायता मिलती है। सेब खाने से प्यास कम लगती है।अगर गर्भवती महिलाएं सुबह उठने के बाद एक सेब खा लिया करें तो उन्हें उल्टी या कैय नहीं आयेगी। जो लोग दुबला होना चाहते हैं उन्हें सेब खाना चाहिये। सेब में कैलोरी कम होती है परंतु उससे शरीर को बहुत ऊर्जा मिलती है

जी पी डी एफ ए इन्टरनेशनल डेयरी एक्सपो में सृष्टि एग्रो

आनंद...आनंद में जी पी डी एफ ए इन्टरनेशनल डेयरी एक्सपो सफलतापूर्वक सम्म्पन्न हुआ।सृष्टी एग्रो ने जी पी डी एफ ए इन्टरनेशनल डेयरी एक्सपो मेंभाग लिया.

बारानी फसलों के लिए वर्षा जीवनरक्षक -प्रभु लाल सैनी

जयपुर, प्रदेश में मौसम केबदलाव की स्थिति में किसानों को राहत पहुंचाने एवं बचाव के उपायों के बारे में कृषि एवं उद्यान विभाग के अधिकारियों से चर्चा करते हुए कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने कहा किप्रदेश में पश्चिम विक्षोभ केकारण हुई मावठ फसलों केलिए बहुत ही फायदेमंद है।

कृषि मंत्री ने बताया किइस समय वर्षा की प्रत्येकबूंद फसलों केलिए अमृत केसमान है। बारानी फसलों के लिए यह वर्षा जीवन रक्षक सिंचाई केरूप में रामबाण साबित होगी। गेहूं, जौ, सरसों, चना, तारामीरा तथा सब्जियों में फायदा होने के साथ पाले से फसलों का बचाव होगा।

उन्होंने बताया किकोटा संभाग में लगभग एक लाख तीस हजार हैक्टेयर क्षेत्र में धनिया की फसल खड़ी है जिसमें मौसम में आये बदलाव के कारण रोग लगने की आशंका है।

श्री सैनी ने धनिये में हुए नुकसान का जायजा लेने के लिए बारां कलक्टर व कृषि विभाग कोटा के

संयुक्त निदेशकको मौकेपर जाकर अवलोकन कर रिपोर्ट राज्य सरकार को भेजने के निर्देश दिये।

महात्मा गांधी नरेगा में सामग्री मद में अब धन की कमी नहीं -ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री

जयपुर, महात्मा गांधी नरेगा योजना को ज्यादा आकर्षक, जन उपयोगी कैसे बनाया जाये और श्रमिकों की इससे बढ़ती बेरूखी को कैसे दूर किया जाये, इस समस्या का समाधान खोजने की पहल करते हुए ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज मंत्री

श्री गुलाब चन्द कटारिया ने सभी जिला परिषद केअधिकारियों तथा योजना से जुड़े अन्य विभागों के अधिकारियों केसाथ इन्दिरा गांधी पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास अध्ययन संस्थान में आयोजित एक कार्यशाला में विचार मंथन किया। कार्यशाला में आये सुझावों पर विचार करने के पश्चात श्री कटारिया ने कहा किमहात्मा गांधी नरेगा योजना का उद्देश्य रोजगार की गारन्टी देना है। इसमें ग्राम पंचायतवार बजट का न्यूनतम 60 प्रतिशत श्रम पर खर्च करना होता है जिससे ज्यादातर कच्चे काम ही हो पाये हैं। अब पक्के कामों पर जोर देने की आवश्यक्ता है जिनसे स्थायी सामुदायिक परिसम्पत्तियों का निर्माण हो पर इसमें यह नियम आडे आता है कि 40 प्रतिशत से ज्यादा राशि सामग्री यथा सीमेन्ट, रोडी, पत्थर पर खर्च नहीं की जा सकती। इसके समाधान के रूप में दर्जनों अन्य योजनाओं को महात्मा गांधी नरेगा से जोड़ दिया गया है।

मक्का और चावल के आटे में लगता है केमिकल का तड़का

रोहतक. शहर से सटे बाहरी इलाकों में अलग अलग छह स्थानों पर सॉस बनाने की छह फैक्ट्रियों में की छापेमारी से स्वास्थ्य विभाग की टीम भी हैरत में है। जिन केमिकल्स और रंगों का प्रयोग मानव स्वास्थ्य के लिए प्रतिबंधित है उन्हीं का प्रयोग यहां खुलेआम किया जा रहा था। आलम ये था कि ताजी सब्जियों के सॉस का दम भरने वाली इन फैक्ट्रियों में मक्की व चावल के आटे में चायना से आए केमिकल और रंगों को डालकर सॉस बनाई जा रही है।

ढ़ाणियों में कनेक्शन सर्वोच्च प्राथमिकता-ऊर्जा मंत्री

जयपुर, राज्य के ऊर्जा मंत्री श्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने निर्देश दिए हैं कि सबके लिये विद्युत योजना केतहत ढ़ाणियों में कनेक्शन देने केकार्य को सर्वोच्च प्राथमिक्ता दी जायें। राज्य में ढ़ाणियों को कनेक्शन देने हेतु एक लाख 50 हजार आवेदन लम्बित है। श्री खींवसर ने निर्देश दिए है कि ढ़ाणियों को बिजली कनेक्शन देने हेतु तत्काल कार्य योजना बनाकर डिमाण्ड नोटिस जारी कर कनेक्शन दिए जाएं।

महात्मा गांधी नरेगा में सामग्री मद में अब धन की कमी नहीं

आदिवासी किसानो के कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण का आयोजन

भरतपुर आदिवासी किसानो के विकास के लिए भारत सरकार की योजनान्तर्गत आदिवासी उप योजना 2013–14 के तहत सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर एवं राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर की संयुक्त परियोजना के अर्न्तगत आदिवासी किसानो के कौशल एवं क्षमता विकास तथा सरसो की उन्नत उत्पादन तकनीकी की जानकारी देने के लिए सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा आदिवासी किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. धीरज सिंह ने कहा कि आदिवासी उप योजना के तहत चयनित आदिवासी क्षेत्रो के किसानो के विकास के लिए यह निदेशालय कार्य कर रहा है, जिसमे आदिवासी किसानो के यहाँ उन्नत किस्मो का प्रदर्शन लगाने, उन्हे छोटे कृषि उपकरण उपलब्ध करवाने, सरसो की उन्नत खेती करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रशिक्षण देने, आदि कार्य किये जा रहे है। आदिवासी उप योजना के नोडल अधिकारी एवं प्रशिक्षण समन्वयक वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ अशोक शर्मा ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले आदिवासी किसानो को निदेशालय के वैज्ञानिको द्वारा सरसो उत्पादन की उन्नत शस्य कियायें, उन्नत किस्में, बीज उत्पादन तकनीक, बीज अधिनियम, अजैविक कारकों का प्रभाव एवं प्रबन्धन, कीट एवं रोग प्रबन्धन, जैविक खाद, आदि विशयों पर प्रशिक्षण दिया गया। सभी प्रशिक्षणार्थियों को मुख्य अथिति एवं निदेशालय के निदेशक महोदय द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान किये गये। योजना के नोडल अधिकारी डॉ अशोक शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का संपूर्ण संचालन किया ।

गुजरात के इस गांव में रहते हैं 400 करोड़पति

साणंद के पास का छोटा सा गांव खोरज हाल ही में करोड़पतियों का गांव बन गया है। यहां करीब 400 लोग रातोंरात करोड़पति हो गए हैं। इनमें से 117 महिलाएं हैं।

गुजरात इंडस्ट्रियल डिवेलपमेंट कॉर्पोरेशन ने हाल ही में जमीन के बदले में लोगों को भारी मुआवजा दिया है जिसके चलते यहां के लोगों को भारी मुनाफा हुआ है। पिछले कुछ गिनों में खोरज वासियों के बीच 850 करोड़ रुपये के चेक बांटे हैं। इसमें सबसे अहम बात यह निकलकर सामने आई है कि इस गांव की अधिकतर महिलाओं के नाम पर जमीन है। उन्हें जमीन के बदले १ करोड़ से ६ करोड़ रुपये तक का मुआवजा मिला है।

25 हजार टन भण्डारण क्षमता विकसित होगी

जयपुर, राज्य में इस वित्तीय वर्ष में सहकारी क्षेत्र में 25 हजार टन भण्डारण क्षमता विकसित की जाएगी।

सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार श्री पवन कुमार गोयल ने बताया कि एक सौ ग्राम सेवा सहकारी समितियों एवं क्रय-विक्रय सहकारी समितियों में 10 हजार टन भण्डारण क्षमता के गोदामों का निर्माण 60 दिवस में करवा लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके अलावा 15 हजार टन भण्डारण क्षमता के150 गोदामों केनिर्माण का कार्य शुरु करवाया जाएगा।

पैंजी, पीट्यूनिया, फ्लॉक्स तथा सननेरिया फूल बढ़ायेंगे जयपुर की सुंदरता-वसुंधरा राजे सिंधिया

जयपुर, श्रीमती वसुंधरा राजे ने शासन सचिवालय स्थित गॉर्डन तथा शहर के प्रमुख सर्किल एवं पार्को का समयबद्ध सौन्दर्यकरण कर इन्हें हरा-भरा और खूबसूरत बनाने के निर्देश दिये हैं। श्रीमती वसुंधरा राजे ने कहा है कि इन सर्किल एवं पार्को में आकर्षक फुलवारी विकसित की जाए। श्रीमती राजे ने शहीद दिवस पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद सचिवालय के गार्डन का अवलोकन करते हुए कार्मिक विभाग के शासन सचिव श्री आलोक गुप्ता को निर्देश दिए कि वे लैंडस्केप आर्टिस्ट से सौंदर्यीकरण का प्लान तैयार कर इसे विकसित करें।

चार सौ पशु चिकित्सक प्रशिक्षित

जयपुर, राज्य मे पशुधन आरोग्य चल चिकित्सा इकाईयों के सफल क्रियान्वयन के लिये दो दिवसीय प्रशिक्षण यहां जामडोली, जयपुर स्थित राजस्थान राज्य पशुधन प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित प्रशिक्षण सपन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रथम समस्त जिला स्तरीय चल चिकित्सा इकाईयो सहित जयपुर, अजमेर तथा कोटा संभाग की तहसील स्तरीय चल चिकित्सा ईकाइयो के 200 प्रभारी अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया तथा दूसरे दिन उदयपुर, जोधपुर, भरतपुर, व बीकानेर संभाग की समस्त तहसील स्तरीय चल चिकित्सा ईकाइयो के 200 प्रभारी अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया ।

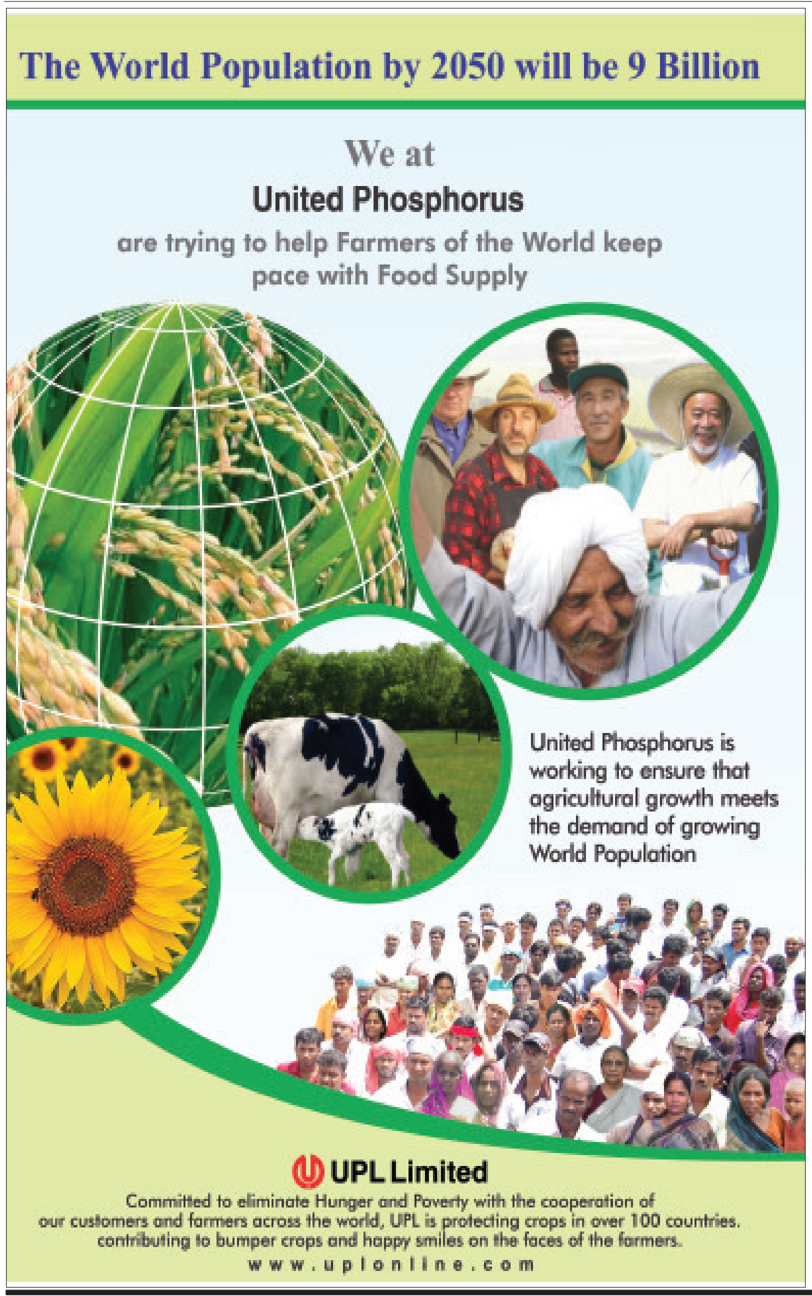

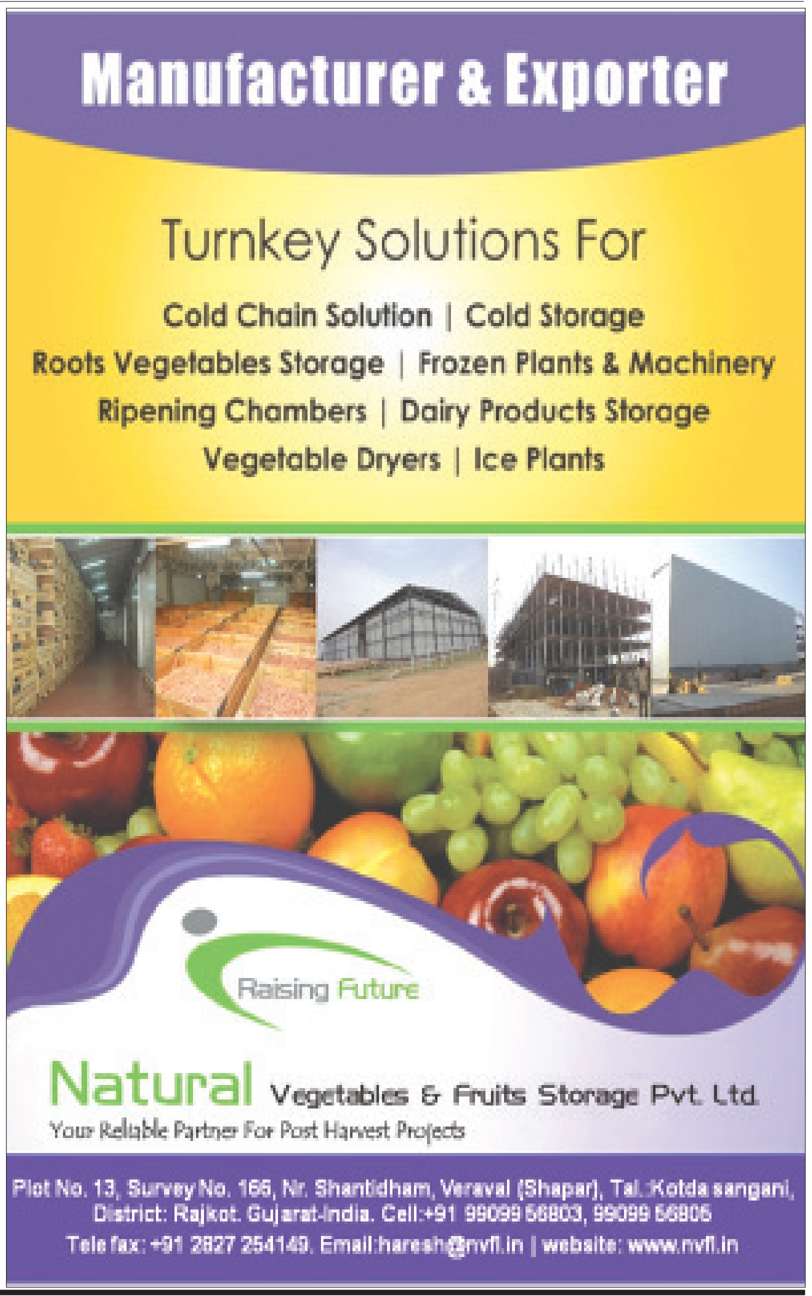

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,**Cell**-9321758550,**Email:info@srushtiagronews.com**, **website:www.srushtiagronews.com**. **RNI No.MAHHIN/2013/49425**